दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3 नीतीश की बंपर जीत के क्या मायने

5 बिहार नतीजों का राहुल फैक्टर

8 सचिन तेंदुलकर के संन्यास के दिन कोहली ने बनाया 'विराट' कीर्तिमान

UPHIN/2023/90814 | वर्ष: 03, अंक: 22 | पृष्ठ संख्या: 8 | मूल्य: 1.00 रू. | सोमवार 17 नवम्बर ,2025

फिर एनडीए सरकार

नतीजों का नीतीश फैक्टर

1. सुशासन...
2. महिलाएं,
3. बेदाग छवि

नीतीश को बना गईं 'अजेय'

नई दिल्ली,एजेंसी। बिहार में नीतीश कुमार एक ऐसा किरदार बनकर उभर रहे हैं, जिनके सियासी किले को अगर अजेय दुर्ग कहा जाए तो गलत नहीं होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि बीते 20 साल में 10वीं बार नीतीश मुख्यमंत्री बनने की दहलीज पर खड़े हैं। विधानसभा चुनाव 2025 के नतीजे आ रहे हैं। मतगणना के बीच माना जा रहा है कि नीतीश कुमार ही एनडीए की तरफ से मुख्यमंत्री बनेंगे। बिहार में एक बार फिर सत्ता का ताज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से सिर सजने जा रहा है। एनडीए गठबंधन बिहार में निर्णायक जीत की ओर बढ़ रहा है। अभी तक के चुनाव परिणाम के मुताबिक भाजपा और जदयू गठबंधन 190 से अधिक सीटों पर बढ़त बनाए हुए हैं। महिला वोटरों की पहली पसंद रहे नीतीश कुमार एक बार फिर अपने परंपरागत मतदाताओं के दम पर सत्ता में वापसी कर रहे हैं। उनकी बेदाग और सुशासन बाबू की छवि महागठबंधन के मुद्दों पर भारी पड़ती दिख रही है। नीतीश की इस जीत के कई मायने हैं। आईए विस्तार से जानते हैं.....

महिलाओं ने रखा नीतीश कुमार का मान

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस चुनाव से पहले बिहार में अपने परंपरागत मतदाताओं को साधने के लिए मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना का एलान किया था। इसके तहत सरकार की ओर से 1.5 करोड़ से अधिक महिलाओं को 10 हजार रुपये की सहायता राशि भेजी गई थी। इससे पहले भी नीतीश महिला मतदाताओं के रिझाने के लिए कई योजना का एलान कर चुके हैं।

चुनाव प्रचार में नीतीश की चुप्पी

चुनाव के एलान से पहले नीतीश कुमार की सेहत को लेकर चिंताएं जताई जा रही थीं। उनकी सेहत को लेकर कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए थे। विपक्षी दलों के साथ–साथ चुनावी विश्लेषक नीतीश के स्वास्थ्य को एनडीए के लिए घातक मान रहे थे। लेकिन चुनाव प्रचार के दौरान नीतीश कुमार संयमित दिखे, उनकी खराब सेहत के कोई वीडियो सामने नहीं आए। चुनाव में नीतीश अपने काम को गिनाते नजर आए और विपक्ष को लेकर कोई ऐसी बयानबाजी नहीं की, जिससे उन्हें चुनाव में नुकसान पहुंचता।

जंगलराज पर भारी पड़ा सुशासन

पूरे चुनाव प्रचार के दौरान एनडीए लालू यादव के कार्यकाल के 'जंगलराज' के मुद्दे को उठाता दिखा। जिसका असर चुनाव के परिणामों पर भी देखने को मिल रहा है। नीतीश कुमार और भाजपा चुनाव प्रचार के दौरान लालू यादव के कार्यकाल के दौरान कानून व्यवस्था के मुद्दे को लगातार उठाती दिखी। पीएम मोदी, अमित शाह अपनी रैलियों में नीतीश कुमार के सुशासन की जमकर तारीफ करते दिखे थे। नीतीश की शानदार छवि का असर चुनाव परिणामों के तौर पर सामने आया है।

नीतीश की व्यक्तिगत छवि

20 साल के शासन के बाद भी नीतीश पर बिहार में मतदाताओं का भरोसा कायम है। इतने लंबे कार्यकाल के बाद भी नीतीश कुमार पर भ्रष्टाचार के आरोप नहीं हैं। वहीं राजनीतिक दलों पर लगने वाले परिवारवाद के आरोपों से भी नीतीश कुमार बचे रहे हैं। इसके अलावा शराबबंदी, महिलाओं के लिए रोजगार योजना जैसे कार्यक्रमों ने उनकी छवि को ओर मजबूत बनाया है।

नीतीश कुमार फिर बने महिलाओं के लाडले

आधी आबादी ने बदला बिहार चुनाव में खेल

तमाम एग्जिट पोल ने साफ इशारा किया था कि एनडीए को महिलाओं, ओबीसी और ईबीसी वर्ग का बंपर समर्थन मिला है। रुझान भी इस बात पर मुहर लगा रहे हैं।

चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार बिहार में दोनों चरणों में कुल मतदान 66.91 फीसदी रहा था। मतदान के दोनों ही चरणों में पुरुषों के मुकाबले में महिलाओं ने ज्यादा वोटिंग की। आंकड़ों के मुताबिक महिलाओं का मतदान प्रतिशत 71.6 फीसदी रहा था। वहीं पुरुषों का मतदान प्रतिशत 62.8 फीसदी ही रहा। इन आंकड़ों से साफ हो जाता है कि पुरुषों के मुकाबले महिलाओं ने करीब 10 फीसदी ज्यादा मतदान किया। रुझानों में एनडीए को 190, महागठबंधन को 49 और अन्य के खाते में 4 सीटें जाने के संकेत मिल रहे हैं। अगर ये रुझान नतीजों में बदलते हैं तो एनडीए बिहार में इतिहास रच देगा।

क्या बिहार विधानसभा चुनाव में भी चला 'मोदी फैक्टर'

बिहार विधानसभा चुनाव में क्या 'मोदी फैक्टर' चला? क्या केंद्र की नीतियों पर बिहार की जनता ने मुहर लगाई? इन सभी सवालों के जवाब अब सामने आने लगे हैं। बिहार में एनडीए ने पूर्ण बहुमत का जादुई आंकड़ा भी पार किया और भाजपा राज्य की अव्वल पार्टी बनने की ओर अग्रसर है। बिहार में विधानसभा चुनाव 2025 का पटाक्षेप होने वाला है। एनडीए एक बार फिर से राज्य में सरकार बनाने की ओर अग्रसर है। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी राज्य का सबसे बड़ा दल (सीटों के मामले में) बनकर उभरा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ–साथ भाजपा नेताओं ने राज्य में बड़े पैमाने पर ताबड़तोड़ रैलियां भी। वहीं केंद्रीय सरकार की नीतियों से भी जनता काफी प्रभावित होती दिखी है। पीएम मोदी ने बिहार में करीब नौ जनसभाएं की और जनता से संवाद किया। पीएम मोदी ने चुनाव से पहले मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत बिहार की 75 लाख महिला लाभार्थियों के बैंक खातों में 10–10 हजार रुपये हस्तांतरित किए, वहीं तमाम केंद्रीय योजनाओं से भी राज्य की जनता लाभान्वित हुई और इसका असर विधानसभा चुनाव में साफ देखने को मिला है।

सत्ता की रेस में क्यों पिछड़ गया विपक्ष?

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में महागठबंधन की करारी हार सिर्फ सीटों का गणित नहीं, बल्कि रणनीति, नेतृत्व, समन्वय और चुनावी जमीन की अनदेखी का समग्र परिणाम है। यह हार कई स्तरों पर गहरे संकेत छोड़ती है। विधानसभा चुनाव के नतीजे विपक्षी राजनीति के संकट और महागठबंधन की आंतरिक टूट–फूट को उजागर करती है, जिसकी वजह से महागठबंधन सत्ता की रेस में कहीं पीछे रह गया।

सम्पादकीय

पाक का 'संवैधानिक तानाशाह'

सैयद असीम मुनीर अहमद शाह को पाकिस्तान का 'शहंशाह' कहें अथवा 'संवैधानिक तानाशाह' कहें या बेताज बादशाह कह लें, लेकिन वह ऐसे शख्स हैं, जो राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और सर्वोच्च अदालत से भी 'सुप्रीम' हैं। दुनिया में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। सैन्य शासक 'तानाशाह' हो सकते हैं या उत्तरी कोरिया का तानाशाह किम जोंग उन है, लेकिन कोई देश जम्हूरियत (लोकतंत्र) का स्वांग भरे, चुनाव कराने का ढोंग किया जाए, वहां का सेना प्रमुख, अंततः, 'मुल्क का शहंशाह' बन जाए, यह विरला उदाहरण पाकिस्तान में ही सामने आया है। 'कठपुतली प्रधानमंत्री' शहबाज शरीफ शुक्र मना सकते हैं कि उनकी हुकूमत का तख्तापलट नहीं किया गया। अलबत्ता पाकिस्तान में कथित निर्वाचित सरकारों की हुकूमतें पलटी जाती रही हैं और सेना प्रमुख 'तानाशाह राष्ट्रपति' बनते रहे हैं। अयूब खान, याह्या खान, जिया उल हक और परवेज मुशर्रफ सरीखे तानाशाहों ने पाकिस्तान पर हुकूमत की है, लेकिन उनके अंत बेहद त्रासद् और दयनीय रहे हैं। मौजूदा फील्ड मार्शल एवं सेना प्रमुख जनरल मुनीर इन तमाम तानाशाहों को पीछे छोड़ कर एक ऐसा उदाहरण बन चुके हैं, जो दुनिया में लोकतंत्र, संविधान, संसद, मानवाधिकार सरीखी व्यवस्थाओं और उनके नागरिक मूल्यों को चिढ़ा रहे हैं। उनका मखौल उड़ा रहे हैं। मुनीर खुद ही पाकिस्तान का 'नया तानाशाह' नहीं बना। उन्होंने हुकूमत और संसद को विवश किया है। संसद और सीनेट में यह संविधान संशोधन पारित किया गया है और मुनीर के लिए एक नए पद का सृजन किया गया है–'चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज (सीडीएफ)।' यह पद 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' भारत में भी है, लेकिन वह निरंकुश और स्वयंभू नहीं है। वह राष्ट्रपति और केंद्रीय कैबिनेट के अधीन सेवारत है। पाकिस्तान के सीडीएफ मुनीर को न तो राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हटा सकते हैं और न ही सर्वोच्च अदालत में कोई केस किया जा सकता है। वह कानून और अपराध से बहुत परे हैं। वह ताउम्र फौजी की वर्दी पहन सकेंगे और थल सेना, वायुसेना, नौसेना के प्रमुखों की नियुक्ति करेंगे। दरअसल अब पाकिस्तान में राष्ट्रपति सेनाओं के सुप्रीम कमांडर नहीं, बल्कि सीडीएफ मुनीर नए 'सर्वोच्च जनरल' होंगे। तीनों सेनाएं और उनके प्रमुख अब सीडीएफ को जवाबदेह होंगे। जाहिर है कि राष्ट्रपति भी 'कठपुतली' बन कर रह जाएंगे। मुनीर को उनकी नई सत्ता से बेदखल करने का एक ही अंतिम रास्ता है–संसद में महाभियोग सरीखा प्रस्ताव दो–तिहाई बहुमत से पारित कराना। यह भी असंभव लगता है, क्योंकि उस प्रस्ताव की इजाजत फौज से भी ली जाएगी। क्या कोई सेना प्रमुख अपने सीडीएफ के खिलाफ महाभियोग की अनुमति देने का दुस्साहस कर सकता है? दूसरा असंभव–सा रास्ता यह लगता है कि अंततः अदालती फैसलों के बाद इमरान खान जेल से बाहर आएं और उनके नेतृत्व में पाकिस्तान की अवाम सडक़ों पर बिछ जाए। उस आंदोलन को 'जमात–ए–इस्लामी' का भी समर्थन हो। मरने–कटने की परवाह न हो।

यह पद 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' भारत में भी है, लेकिन वह निरंकुश और स्वयंभू नहीं है। वह राष्ट्रपति और केंद्रीय कैबिनेट के अधीन सेवारत है। पाकिस्तान के सीडीएफ मुनीर को न तो राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री हटा सकते हैं और न ही सर्वोच्च अदालत में कोई केस किया जा सकता है। वह कानून और अपराध से बहुत परे हैं। वह ताउम्र फौजी की वर्दी पहन सकेंगे और थल सेना, वायुसेना, नौसेना के प्रमुखों की नियुक्ति करेंगे। दरअसल अब पाकिस्तान में राष्ट्रपति सेनाओं के सुप्रीम कमांडर नहीं, बल्कि सीडीएफ मुनीर नए 'सर्वोच्च जनरल' होंगे।

आजादी की नई लड़ाई जैसा संघर्ष हो, तब मुनीर को पाकिस्तान छोड़ कर भागने को विवश किया जा सकता है! दुनिया में बड़े–बड़े, ताकतवर राष्ट्रध्यक्षों, राष्ट्रपतियों, प्रधानमंत्रियों को देश छोड़ कर भागने पर मजबूर होना पड़ा है, इसका इतिहास साक्षी है। पाकिस्तान के भी बदतर हालात हैं। अफगानिस्तान के तालिबान, बलूच लड़ाके, टीटीपी, टीएलपी, पाक अधिकृत कश्मीर के विद्रोही आदि ने चारों तरफ से पाकिस्तान को घेर रखा है। अफगान तालिबान ने पाकिस्तान को सात खंडों में विभाजित करने को मोर्चे तैनात कर लिए हैं। विद्रोही पाकिस्तान के पंजाब तक पहुंच चुके हैं और इस्लामाबाद को हिला देने की हुंकारें भर रहे हैं। खैबर, बलूचिस्तान, अफगान सीमा पर पाकिस्तान के फौजियों को विस्फोटों से उड़ा कर मारा जा रहा है।

उनकी चौकियों पर कब्जे किए जा रहे हैं। सीडीएफ बनकर मुनीर कौन–सा मोर्चा फतेह कर लेगा? वह अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप के साथ 'सौदेबाजी' कर सकता है और मुल्क का शहंशाह बन सकता है। सवाल है कि अमरीकी राष्ट्रपति कब तक और किसके सगे हुए हैं? मुनीर पाकिस्तान के दुर्लभ खनिजों के सौदे अमरीका के साथ नहीं कर सकते, क्योंकि वहां विद्रोही सशस्त्र तैनात हैं और वे अब पाकिस्तान से अलग होने पर आमादा हैं।

प्रदूषण पर विरोध और गिरफ्तारी

देश की राजधानी दिल्ली में इंडिया गेट तरह–तरह के प्रदर्शनों का गवाह रहा है, लेकिन ऐसा शायद पहली बार हुआ है कि सांस लेने के अधिकार को लेकर यहां लोगों ने अपनी आवाज़ बुलंद की। दिल्ली की हवा के बेहद खराब स्तर पर पहुंचने के बीच रविवार को इंडिया गेट पर 'स्मॉग से आज़ादी!' जैसे पोस्टर के साथ विरोध प्रदर्शन किया गया। हालांकि पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में ले लिया। जिसके बाद सोशल मीडिया पर हिटलर के बनाए गैस चेंबर को याद करते हुए लोगों ने लिखा कि इसका विरोध करेंगे तो सजा मिलेगी ही। इस तरह की टिप्पणियां सत्ता के लिए चेतावनी है, जहां लोगों ने लोकतंत्र की बुनियाद पर सरकार बनाई, मगर अहसास तानाशाही का हुआ तो अब नाराजगी दिख रही है। नयी पीढ़ी के लिए अब जेन ज़ी शब्द का इस्तेमाल होने लगा है। जनरेशन का संक्षिप्तीकरण जेन और ज़ी यानी (अंग्रेजी वर्णमाला का आखिरी अक्षर)। बीते वक्त में बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल इन तीनों पड़ोसी देशों में युवाओं ने ही आंदोलन छेड़ा था, जिससे सत्ता बदलाव का रास्ता तैयार हुआ था। दुनिया के और भी देशों में युवा इसी तरह सड़कों पर निकले और सत्ता को झुकना पड़ा।

इन उदाहरणों को सामने रखकर देश में पिछले 11 सालों से सत्तारुढ़ मोदी सरकार को भी चेतावनी मिलती रही कि बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार आदि पर सरकार ने कदम नहीं उठाया तो जेन ज़ी की नाराजगी झेलनी पड़ सकती है। इधर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भी अब वोट चोरी जैसे मुद्दों पर युवाओं का आह्वान करने लगे हैं कि यही पीढ़ी लोकतंत्र की रक्षा करेगी तो भाजपा को इसमें राष्ट्र–विरोधी भावनाओं की बू आने लगती है। भाजपा आरोप लगाती है कि राहुल गांधी देश में अस्थिरता लाने के लिए युवाओं को आगे कर रहे हैं। लेकिन भाजपा ने शायद यह नहीं सोचा होगा कि राजनैतिक तौर पर जिन्हें वह अहम मुद्दे मानती है, उनसे इतर प्रदूषण को लेकर युवाओं का गुस्सा भड़क जाएगा। क्योंकि प्रदूषण तो शायद मोदी सरकार के लिए कोई मुद्दा ही नहीं है, अन्यथा पिछले 11 सालों से देश यथास्थितिवाद का शिकार न हुआ होता। गौरतलब है कि दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 370 के स्तर पर पहुंच गया, जो 'बहुत खराब' श्रेणी में आता है। नेशनल कैपिटल रीजन (एनसीआर) में भी हालात ऐसे ही हैं। नोएडा, गुड़गांव, फरीदाबाद, गाजियाबाद सब दमघोंटू हवा में कैद हैं। नवंबर की शुरुआत से नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2) का स्तर अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंच गया है जो सीधे फेफड़ों को नुकसान पहुंचा रहा है। ऐसे में हवा साफ करने के सघन उपायों की जगह कभी क्लाउड सीडिंग से नकली बारिश, कहीं कुछ इलाकों पर पानी का छिड़काव जैसे ऊपरी उपाय किए जा रहे हैं, जिनमें जनता के धन की बर्बादी तो है, राहत नाममात्र को भी नहीं है। ऊपर से सरकार को इस बात पर आपत्ति है कि जब धरने–प्रदर्शन के लिए जंतर–मंतर का स्थान ही तय किया गया है, तो इंडिया गेट पर लोग प्रदर्शन के लिए क्यों पहुंचे।

ध्यान रहे कि प्रदर्शन शांतिपूर्ण था, केवल नारे और तख्तियों के साथ बच्चे, बूढ़े, जवान एकत्र हुए थे, ताकि सरकार को बताएं कि इस समय सांस लेना उनके लिए कितना दूभर हो गया है। फिर भी दिल्ली पुलिस और अर्धसैनिक बलों ने दंगा नियंत्रण गियर में पहुंचकर कई प्रदर्शनकारी युवकों को हिरासत में ले लिया। इसे कानून व्यवस्था का मामला बताते हुए पुलिस ने कार्रवाई की।

सरकार की नाकामी का इससे बड़ा सबूत क्या होगा कि उसे धरना प्रदर्शन कहां हो रहा है इससे तकलीफ है, इस बात से सरोकार नहीं है कि आखिर लोगों को प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए मजबूर क्यों होना पड़ा। कोई जिम्मेदार नहीं इंडिया गेट पर एक प्रदर्शनकारी ने कहा, 'यह हेल्थ इमरजेंसी है, न कि दोषारोपण का खेल। ट्रायल–एंड–एरर से हमारा भविष्य बर्बाद हो चुका है। सरकार को अब साफ हवा की नीति तुरंत लागू करनी चाहिए।' एक अन्य ने कहा, 'अमीर लोग एयर प्यूरीफायर खरीद सकते हैं या पहाड़ों पर भाग सकते हैं, लेकिन हम कहां जाएं? हर सर्दी में सांस लेने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। हवा सरकारी नहीं, सबकी है।' वायु प्रदूषण कितना घातक हो चुका है, यह बात प्रदर्शन में शामिल एक डॉक्टर के बयान से समझी जा सकती है, उन्होंने कहा कि, दिल्ली में हर तीसरा बच्चा फेफड़ों की क्षति का शिकार है, वे साफ हवा वाले बच्चों से लगभग 10 साल कम जीते हैं। लंबे समय तक प्रदूषण से हृदय रोग, स्ट्रोक और अस्थमा होता है। यह गर्भ से शुरू होकर बुढ़ापे तक पीछा करता है। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने पुलिस की कार्रवाई और प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी पर कड़ी आपत्ति जताई। उन्होंने एक्स पर लिखा– स्वच्छ हवा का अधिकार एक बुनियादी मानवाधिकार है। शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन का अधिकार हमारे संविधान द्वारा सुनिश्चित किया गया है। शांतिपूर्ण ढंग से स्वच्छ हवा की मांग करने वाले नागरिकों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार क्यों किया जा रहा है? वायु प्रदूषण करोड़ों भारतीयों को प्रभावित कर रहा है, हमारे बच्चों और हमारे देश के भविष्य को नुकसान पहुंचा रहा है। लेकिन वोट चोरी के ज़रिए सत्ता में आई सरकार को इसकी कोई परवाह नहीं है, न ही वह इस संकट को हल करने का प्रयास कर रही है। हमें स्वच्छ हवा की मांग कर रहे नागरिकों पर हमला करने के बजाय, अभी वायु प्रदूषण पर निर्णायक कार्रवाई करने की आवश्यकता है। राहुल गांधी की इस बात को राजनैतिक विचारधारा और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर समझने की जरूरत है। वायु प्रदूषण किसी पर यह देखकर असर नहीं करता कि किसने भाजपा को वोट दिया, किसने आप को या कांग्रेस को, या कौन राम मंदिर बनने से खुश हुआ या नहीं हुआ। लोगों को यह समझने की जरूरत है कि सांस लेने जैसी नैसर्गिक बल्कि जिंदा होने की पहली शर्त पर ही जब संकट आ जाए और उस पर भी सरकार पीड़ितों पर ही कार्रवाई करे तो यह कितनी गैरजिम्मेदाराना और एक हद तक आपराधिक हरकत है।

भारत को घरेलू रासायनिक उर्वरक उत्पादन बढ़ाने के उपाय करने ही होंगे

भारत के लिए अपने कृषि उत्पादन को आयातित उर्वरक पर अत्यधिक निर्भर बनाना कोई अच्छी बात नहीं है। देश को रासायनिक उर्वरकों का घरेलू उत्पादन बढ़ाना होगा। जहां मौजूदा उर्वरक उत्पादकों को अपनी–अपनी क्षमता का व्यापक विस्तार करने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है, वहीं नई इकाइयों को तेज़ी से स्थापित करने के लिए आकर्षक प्रोत्साहन दिए जाने चाहिए। रणनीतिक दृष्टि से, खाद्य सुरक्षा से जुड़े भारत के कृषि उत्पादन को आयातित उर्वरकों पर अत्यधिक निर्भर बनाना गलत होगा। यह समझना मुश्किल है कि अपनी आज़ादी के 78 साल बाद भी, दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश भारत अपनी 1.46 अरब से ज़्यादा आबादी का पेट भरने के लिए आयातित उर्वरक पर भारी निर्भरता बनाए हुए है। चीन द्वारा अक्टूबर के मध्य से निर्यात निलंबित करने के बाद, भारत में सर्दियों के सबसे महत्वपूर्ण रबी फसल सीज़न से पहले, उर्वरक मूल्य में अचानक वृद्धि हुई और इसमें आगे भी वृद्धि की संभावना बलवती हो गयी है, जो विशेष रूप से गेहूं के साथ–साथ चना, मटर, सरसों और जौ जैसी अन्य फसलों के उत्पादन और मूल्य को प्रभावित करेगी। प्रायोजित पत्रकारिता की चुनौतियां– 2 चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गेहूं उत्पादक देश है। रबी की फसलें शरद ऋतु (अक्टूबर–नवंबर) में बोई जाती हैं और वसंत (मार्च–अप्रैल) में काटी जाती हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा उर्वरक आयातक बना हुआ है, जबकि रूस के बाद चीन दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उर्वरक निर्यातक रहा है। चीन ने अगली सूचना तक उर्वरक के निर्यात को निलंबित कर दिया है। चीन से टीएमएपी (तकनीकी मोनोअमोनियम फॉस्फेट) जैसे विशेष उर्वरकों और एडब्लू जैसे यूरिया–समाधान उत्पादों के साथ–साथ डीएपी (डायमोनियम फॉस्फेट) और यूरिया सहित पारंपरिक मृदा पोषक तत्वों की आपूर्ति नहीं होगी। बताया जाता है कि भारत लगभग 95 प्रतिशत विशेष उर्वरक चीन से आयात करता है। देश में सालाना लगभग 2,50,000 टन विशेष उर्वरकों की खपत होती है, जिनमें से लगभग 65 प्रतिशत का उपयोग रबी मौसम के दौरान किया जाता है। वैकल्पिक आपूर्ति स्रोतों में दक्षिण अफ्रीका, चिली और क्रोशिया शामिल हैं। भारत में रासायनिक उर्वरक उत्पादन इतना कम है कि चालू वित्त वर्ष के पहले सात महीनों के दौरान देश में सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाले यूरिया का आयात भी दोगुने से अधिक बढ़कर 58.62 लाख टन हो गया है।

पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान, भारत ने 24.76 लाख टन यूरिया का आयात किया था। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अनुसार, नवम्बर महीने और दिसंबर के लिए लगभग 17.5 लाख टन उर्वरकों का आयात प्रस्तावित है। उर्वरकों की कमी को पूरा करने के लिए, सरकार चीन द्वारा निर्यात निलंबन के मद्देनजर आयात बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास कर रही है ताकि न केवल बढ़ती घरेलू मांग को पूरा किया जा सके, बल्कि निकट भविष्य के लिए बफर स्टॉक भी बनाया जा सके। हाल के निर्यात मूल्य आंकड़ों के आधार पर, उर्वरकों के प्रमुख आयात स्रोत रूस, केनडा, अमेरिका, मोरक्को, सऊदी अरब और नीदरलैंड हैं।

।सेव त्मंक – भविष्य निधि : कर्मचारी हित बनाम प्रशासनिक सुविधा भारत अपने लोगों का पेट भरने के लिए अपने मजबूत कृषि उत्पादन को बनाए रखने हेतु यूरिया, डाइ–अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) जैसे कई प्रकार के उर्वरकों के साथ–साथ विभिन्न एनपीके कॉम्प्लेक्स उर्वरकों का आयात करता है। सरकार की प्राथमिक मुफ्त खाद्यान्न आपूर्ति योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के अंतर्गत आने वाले लगभग 81.35 करोड़ लाभार्थियों को मुफ्त खाद्यान्न प्रदान करती है। इस योजना को दिसंबर 2028 तक बढ़ा दिया गया है। इस योजना के तहत खाद्यान्न (चावल, गेहूं या मोटा अनाज) पूरी तरह से मुफ्त प्रदान किया जाता है।

अंता उपचुनाव में कांग्रेस के प्रमोद जैन भाया जीते

बारां,एजेंसी। अंता उपचुनाव में कांग्रेस 15 हजार से ज्यादा मतों से जीत गई है। भाजपा दूसरे नंबर पर रही। वहीं निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा तीसरे नंबर पर रहे हैं। बारां जिले की अंता विधानसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी प्रमोद जैन भाया ने 15 हजार से ज्यादा मतों से जीत हासिल की है। यहां भाजपा प्रत्याशी मोरपाल सुमन को 53868 वोट मिले हैं। जानकारों का कहना है कि अंता चुनाव में भाजपा ने अपने प्रमुख नेताओं को प्रचार के लिए उतारा था। इसमें वसुंधरा राजे और सीएम भजनलाल दोनों के नाम शामिल थे। दोनों ने यहां प्रचार किया था। इसके बाद भी भाजपा को यहां जीत नहीं मिली है। अंता विधानसभा सीट झालावाड़ लोकसभा में आती है जहां से पूर्व सीएम वसुंधरा राजे के बेटे दुष्यंत सिंह सांसद हैं। इसके बाद भी भाजपा पीछे रही। ये माना जा रहा है कि नरेश मीणा के यहां से उतरने की वजह से चुनाव त्रिकोणीय हो गया। इसका सीधा नुकसान भाजपा को हुआ है। अंता विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी प्रमोद जैन भाया ने जीत दर्ज कर ली। प्रमोद को 69462 वोट मिले। वहीं भाजपा प्रत्याशी मोरपाल सुमन को 53868 वोट मिले। इसके साथ ही निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा को 53740 वोट मिले। हालांकि अभी चुनाव आयोग की तरफ से आधिकारिक घोषणा होना बाकी है।

महागठबंधन की सबसे बड़ी कमजोरी

पटना,एजेंसी। चुनाव के शुरुआती दौर में राजद और कांग्रेस के बीच नेतृत्व व समन्वय और चेहरे को लेकर जो विवाद हुए, उसे जनता और मतदाताओं ने भी महसूस किया। चुनाव के पहले जब राजनीतिक दलों को सीटों के तालमेल से लेकर प्रचार की रणनीति तक पर काम करते हैं, उस वक्त महागठबंधन के तमाम सहयोगी दल सीटों की खींचतान, मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री के फेस जैसे मामलों को लेकर आपस में उलझे रहे। तेजस्वी यादव भी रणनीति के मामले में फेल साबित हुए। उन्होंने भले पूरे प्रदेश भर मे घूम–घूम कर चुनावी सभाएं की, लेकिन गठबंधन के साथी दलों के साथ मुद्दों और सीटों को लेकर कोई ठोस समन्वित रणनीति बनाने में वे पूरी तरह असफल साबित हुए।

2. जातीय व सामाजिक समीकरणों का गलत आकलन बिहार की राजनीति में सामाजिक समीकरण सिर्फ आंकड़े नहीं, बल्कि भरोसे और जमीन पर डिलीवरी से जुड़े होते हैं।

इस बार महागठबंधन ने जातीय गणित का अति–विश्वासपूर्वक इस्तेमाल किया, लेकिन सामाजिक परिवर्तन और नए समीकरणों को समझने में चूक गया।

निम्नवर्गीय और पिछड़े तबकों में एक नई राजनीतिक चेतना उभर रही थी, जिसका लाभ एनडीए ने बेहतर ढंग से उठाया।

महिला मतदाताओं, पहली बार वोट करने वाले युवाओं और गैर–परंपरागत जातीय समूहों में महागठबंधन अपनी पकड़ नहीं बना सका। विपक्ष सिर्फ पुराने वोट बैंक के भरोसे चुनाव जीतने बैठा था, जबकि मतदाता नए मुद्दों, नए चेहरे और स्थिर नेतृत्व की तलाश में था।

3. कांग्रेस की कमजोर कड़ी और आंतरिक कलह : महागठबंधन का एक बड़ा स्तंभ होने के बावजूद कांग्रेस इस चुनाव में लगातार बोझ की तरह साबित हुई। पार्टी में टिकट वितरण को लेकर भारी नाराजगी थी। कई सीटों पर गलत प्रत्याशी चयन की वजह से स्थानीय समीकरण बिगड़ गए। कृष्णा ल्लावारू जैसे प्रभारी नेताओं की कार्यशैली से कार्यकर्ताओं में असंतोष रहा। राजद–कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग को लेकर गहरे मतभेद शुरू से अंत तक बने रहे, नतीजा यह हुआ कि संयुक्त लड़ाई कमजोर, बिखरी और अविश्वसनीय दिखी। कांग्रेस की कमजोर ग्राउंड मशीनरी और प्रचार की अनियमितता महागठबंधन के लिए घाटे का सौदा साबित हुई।

4. मुद्दों की जुगलबंदी में पिछड़ना महागठबंधन चुनावी एजेंडा तय करने में पूरी तरह असफल रहा। रोजगार, महंगाई, शिक्षा और कृषि जैसे बड़े मुद्दे जरूर उठाए गए, लेकिन जो नैरेटिव बनना चाहिए था, वह नहीं बन पाया। इसके उलट एनडीए ने विकास, कानून–व्यवस्था और स्थिर सरकार के माडल को आक्रामक तरीके से जनता तक पहुंचाया। महागठबंधन की आवाज मतदाताओं तक बिखरी हुई और अस्पष्ट पहुंची। तेजस्वी यादव की सभाओं में भी वही पुराने वादों की पुनरावृत्ति होती दिखी, जिससे युवाओं को नई दिशा का भरोसा नहीं मिला।

नीतीश की बंपर जीत के क्या मायने

नई दिल्ली,एजेंसी। बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों से अब काफी कुछ साफ है। यह स्पष्ट हो चुका है कि राज्य में सरकार बनाने की स्थिति में कौन है? एग्जिट पोल्स के अनुमानों को देखने के बाद ये नतीजे भले ही स्वाभाविक लगें, फिर भी यह चुनाव कई अहम सवालों के जवाब दे गया है...

बिहार में जनादेश की बहार में 'नीतीशे कुमार' पर जनता ने एक बार फिर ऐतबार जता दिया। अपनी सेहत और नेतृत्व पर महागठबंधन की तरफ से उठते सवालों के बावजूद वे जनता की पसंद बने रहने में कामयाब हुए। 'तेजस्वी का प्रण' काम नहीं आया। प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी भी बेअसर साबित हुई। जानिए, नीतीश की इस बंपर जीत के मायने क्या हैं? इसके बड़े कारण क्या हैं?

1. पहला कारण– नीतीश के नेतृत्व पर भरोसा

इस चुनाव में किस बात की सबसे ज्यादा चर्चा रही? इसका जवाब है– नीतीश कुमार और उनका नेतृत्व।..भारत जैसे लोकतंत्र में हर चुनाव अहम है। राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण राज्यों में से एक बिहार की बात करें, तो इस बार यहां चुनाव इसलिए खास रहे क्योंकि यहां नीतीश कुमार लंबे समय से सत्ता में हैं। वे 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कहने पर बिहार के मुख्यमंत्री बने थे। बाद के वर्षों में उन्होंने गठबंधन बदले, लेकिन सत्ता उनके इर्द–गिर्द ही रही। अब तक वे कुल नौ बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ले चुके हैं। 2020 के बाद से ही वे तीन बार शपथ ले चुके थे। अब 10वीं बार की तैयारी में हैं। इस बार चुनाव में बड़ा सवाल यह था कि क्या नीतीश कुमार सत्ता विरोधी लहर का सामना कर पाएंगे? इस बार उनकी पार्टी जनता दल–यूनाइटेड 101 सीटों पर चुनाव में उतरी थी। महागठबंधन शुरुआत में यह दबाव बनाने में कामयाब रहा कि नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया जा रहा है। नतीजतन, भाजपा के बड़े नेताओं ने बार–बार यह कहकर नीतीश के नेतृत्व पर मुहर लगा दी कि जीत के बाद तो वे ही विधायक दल के नेता चुने जाएंगे।

2. दूसरा कारण– बंपर मतदान

बिहार में इस बार दो चरण में मतदान हुआ। पहले चरण में 6 नवंबर को 18 जिलों की 121 सीटों पर मतदान हुआ। कुल 65.08 फीसदी वोट पड़े। दूसरे चरण में 20 जिलों की 122 सीटें पर मतदान हुआ। कुल 69.20 फीसदी वोट पड़े। इस तरह दोनों चरणों को मिलाकर देखा जाए, तो इस बार कुल मतदान 67.13 फीसदी मतदान हुआ। यह सिर्फ एक सामान्य आंकड़ा नहीं है क्योंकि बिहार के अब तक के चुनाव इतिहास में इतना ज्यादा मतदान कभी नहीं हुआ। चुनावी विश्लेषकों और चुनावी इतिहास के आंकड़ों पर गौर करें, तो यह सामान्य धारणा मानी जाती है कि ज्यादा मतदान यानी या तो सत्ता विरोधी लहर है, या फिर सत्ताधारी पार्टी या गठबंधन के पक्ष में एकतरफा मतदान हुआ है। नतीजे भी कुछ इसी तरह आए हैं। जदयू को पिछली बार 15.39 फीसदी वोट मिले थे। इस बार उसे 18 फीसदी से ज्यादा वोट मिलते दिख रहे हैं। यानी तीन फीसदी से ज्यादा का इजाफा जदयू के वोट बैंक में हुआ है। बढ़े हुए वोट प्रतिशत का नतीजों पर भी असर नजर आया। पिछले चुनाव में जदयू जहां तीसरे नंबर की पार्टी थी, इस बार उसे 30 से ज्यादा सीटों का फायदा हुआ है और वह राजद से भी आगे है।

3. तीसरा कारण– महिलाओं के लिए योजना और महिलाओं की तरफ से मतदान

बिहार में नीतीश कुमार की जीत का बड़ा कारण महिलाएं मानी जाती रही हैं। लड़कियों को साइकिल देने से लेकर महिलाओं के खाते में सीधे 10 हजार रुपये भेजने तक की योजनाओं का नीतीश को फायदा होता रहा। इस बार चुनाव से ऐन पहले नीतीश कुमार ने करीब डेढ़ करोड़ महिलाओं के खाते में 10 हजार रुपये भेज दिए। इसे चुनाव का बड़ा गेमचेंजर माना गया। मतदान के दौरान इसका असर भी तब दिखाई दिया, जब दोनों ही चरणों में महिलाओं ने पुरुषों के मुकाबले बढ़–चढ़कर वोट डाला। पुरुषों की तुलना में पहले चरण में 7.48 फीसदी और दूसरे चरण में 10.15 फीसदी अधिक महिलाओं ने वोट किया। सुपौल किशनगंज पूर्णिया कटिहार में 80 फीसदी से अधिक महिलाओं ने वोटिंग की। किशनगंज में सबसे अधिक 88.57 फीसदी महिलाओं ने वोट किया। बिहार के 38 जिलों में से 37 जिलों में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं का वोटिंग प्रतिशत ज्यादा रहा। सिर्फ पटना में पुरुषों ने महिलाओं से ज्यादा वोटिंग की।

4. चौथा कारण– बिखरा हुआ विपक्ष

पहले चरण के लिए नामांकन की आखिरी तारीख तक महागठबंधन में सीटों के बंटवारे की स्थिति साफ नहीं थी। कई सीटों पर गठबंधन में शामिल दो–दो दलों के उम्मीदवार आमने–सामने थे। इस देरी का फायदा एनडीए को मिला, जहां महागठबंधन के मुकाबले काफी पहले सीट शेयरिंग हो चुकी थी। भाजपा और जदयू बराबरी से 101–101 सीटों पर चुनाव में उतरे थे। इस वजह से दोनों बड़े दलों में मतभेद की स्थिति नहीं थी। वहीं, महागठबंधन ने अंत तक सीट शेयरिंग के बारे में औपचारिक एलान या आंकड़े नहीं बताए। महागठबंधन की एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस जरूर हुई, जिसमें तेजस्वी को मुख्यमंत्री पद का और वीआईपी के मुकेश सहनी को उपमुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित किया गया। इसके बाद एनडीए ने जमकर इस बात को उछाला कि महागठबंधन ने किसी मुस्लिम और दलित

चेहरे को डिप्टी सीएम पद का उम्मीदवार घोषित नहीं किया है।

5. पांचवां कारण– प्रधानमंत्री मोदी और नीतीश कुमार की छवि

एनडीए इस बात को स्थापित करने में कामयाब रहा कि डबल इंजन वाली सरकार ही बिहार में विकास को गति दे सकती है। इसमें एनडीए को सबसे बड़ी मदद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की छवि से मिली। एनडीए ने इन्हीं दो चेहरों को आगे रखकर चुनाव लड़ा। प्रधानमंत्री मोदी और चिराग पासवान की केमिस्ट्री की वजह से लोजपा (रामविलास) भी गठबंधन में मजबूती से खड़ी थी। एनडीए वोटरों के बीच यह धारणा बनाने में कामयाब रहा कि बिहार की जनता अब जंगलराज की दोबारा वापसी नहीं चाहती और सुशासन चाहती है। लालू–राबड़ी की सरकार के कार्यकाल से 'जंगलराज' शब्द किस तरह जुड़ा है, इसका असर तेजस्वी के प्रचार में भी दिखा। पूरे प्रचार के दौरान राजद ने कहीं भी लालू या राबड़ी की तस्वीर का इस्तेमाल नहीं किया। पोस्टरों में अकेले तेजस्वी ही नजर आए।

नीतीश के अलावा किन चेहरों पर इस बार नजर थी?

पहला चेहरा हैं– तेजस्वी यादव। लालू प्रसाद यादव भले ही राजद सुप्रीमो हैं, लेकिन अब पार्टी का चेहरा तेजस्वी ही हैं। नीतीश सरकार के साथ कुछ महीनों की सरकार के दौरान तेजस्वी उपमुख्यमंत्री रहे। उनके कार्यकाल के दौरान जो सरकारी भर्तियां हुईं, इस बार राजद ने उसे ही सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बनाया।

दूसरा चेहरा हैं– प्रशांत किशोर। उनकी पार्टी जनसुराज का इस चुनाव में पदार्पण हुआ। प्रशांत किशोर चुनावी मैदान में नहीं उतरे, लेकिन उन्होंने एनडीए और महागठबंधन से अलग दिखने और राज्य के बुनियादी मुद्दों को छूने की कोशिश। यह माना गया कि इस बार उनकी पार्टी कुछ सीटों पर जीत की स्थिति में आ सकती है या कई सीटों पर एनडीए अथवा महागठबंधन के प्रत्याशियों के वोट काटकर खेल बिगाड़ सकती है। हालांकि, रुझानों से यह साफ है कि जनसुराज अपने पहले टेस्ट में कोई करिश्मा नहीं कर पाई।

भाजपा के शीर्ष नेताओं ने संभाला मोर्चा

बिहार में गृह मंत्री अमित शाह ने 30 से ज्याद, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 12 से ज्यादा और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 10 से ज्यादा रैलियों को संबोधित किया। इस कड़ी में यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी 30 से अधिक जनसभाएं संबोधित की। वहीं अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी बिहार में जमकर चुनाव प्रचार किया। सीएम योगी के बाद दूसरे नंबर पर दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने करीब 18 जनसभाएं कीं।

सीएम नीतीश कुमार ने 80 से ज्यादा रैलियां

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विधानसभा चुनाव 2025 में 80 से ज्यादा जनसभाएं की हैं। इसमें सड़क मार्ग और हवाई मार्ग से की गई जनसभाएं भी शामिल हैं। सीएम नीतीश कुमार ने राज्य में करीब एक हजार किमी की यात्रा भी की है, इस दौरान उन्होंने करीब आठ विधानसभा क्षेत्रों में जनता से संवाद किया।

एनडीए के लिए चिराग पासवान ने झोंकी ताकत

बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए नेताओं की तरफ से की गई जनसभाओं और रैलियों की बात की जाए तो इसमें लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान ने सबसे ज्यादा 180 से ज्यादा जनसभाएं की। वहीं एनडीए के गठबंधन दलों की बात की जाए तो हिंदुस्तान आवाम मोर्चा (सेक्युलर) के प्रमुख जीतन राम मांझी ने 32 और राष्ट्रीय लोक मोर्चा के अध्यक्ष उपेंद्र कुशवाहा ने 46 जन सभाओं को संबोधित किया।

बिहार विधानसभा चुनाव 2025

बिहार में विधानसभा चुनाव के लिए मतदान दो चरणों में हुआ है, जिसमें पहले चरण की वोटिंग 6 नवंबर और दूसरे चरण की वोटिंग 11 नवंबर को हुई। वहीं मतदान की प्रतिशत की बात की जाए तो पहले चरण में जहां 65.08 फीसदी वोटिंग हुई, वहीं दूसरे चरण में बंपर 68.69 वोटिंग हुई है। राज्य के विधानसभा चुनाव में कुल मतदान प्रतिशत 67.13 दर्ज हुआ है।

तेजस्वी का प्रण नहीं फूंक सका प्राण महागठबंधन का ऐसा हश्र क्यों ? छह बड़े कारण

बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों में एनडीए ने महागठबंधन को पीछे छोड़ दिया है। क्या वजह रही कि विपक्ष इस बार दमदार वापसी नहल कर पाया

पटना,एजेंसी। बिहार की विधानसभा चुनाव में जनता ने एक मजबूत संदेश दिया है। जदयू–भाजपा की अगुवाई वाली एनडीए महागठबंधन को बड़े अंतर से मात देती दिख रही है। शुरुआती दौर में ही एनडीए ने आकड़ों में स्पष्ट बढ़त बना ली है। इससे विपक्षी गठबंधन की उम्मीदों को बड़ा झटका लगा है। 01 बजे तक के रुझानों में एनडीए 198 सीटों पर बढ़त बनाए हुए है। वहीं, राजद की अगुवाई में महागठबंधन के प्रत्याशी केवल 39 सीटों पर ही आगे चल रहे हैं। अन्य उम्मीदवार तीन सीटों पर आगे हैं। बिहार चुनाव नतीजों के रुझानों में सबसे अधिक चौंकाया है जनसुराज ने। प्रशांत किशोर की पार्टी के उम्मीदवार किसी भी सीट पर बढ़त नहीं बना सके हैं।

1. हवा–हवाई चुनावी वादे

तेजस्वी ने हर घर सरकारी नौकरी, पेंशन, महिला सशक्तिकरण जैसे बड़े वादे किए, लेकिन फंडिंग और टाइमलाइन का ठोस प्लान जनता से साझा नहीं किया। ऐसे में ये दावे लोगों को हकीकत से अधिक हवा–हवाई लगने लगे। महागठबंधन के नेता बार–बार कहते रहे कि ब्लूप्रिंट आएगा, लेकिन चुनाव खत्म होने तक नहीं आ पाया।

इससे राजद और महागठबंधन के नेताओं की विश्वसनीयता जनता की नजर में कम हुई। दूसरी ओर, एनडीए ने महागठबंधन के दावों को हवा–हवाई बताकर चुनावों के दौरान खूब भुनाया। नतीजा ये रहा कि वे अपने वोटरों को लामबंद करने में

सफल रहे।

2. सीट बंटवारे में देरी और भरोसे की कमी

पूरे चुनाव में महागठबंधन खेमे में राजद ही राजद दिखा। राजद ने चुनाव प्रचार को स्वयंभू अंदाज में आगे बढ़ाया। राजद, कांग्रेस और वाम दलों के बीच अंदरखाने भरोसे की कमी दिखी। राजद का कांग्रेस और वाम दलों के साथ हुआ सीट शेयरिंग विवाद महागठबंधन को भारी पड़ गया। सीट बंटवारे का एलान महागठबंधन की ओर से काफी देर से किया गया। इससे एकजुट होकर जमीन पर उन्हें चुनावी तैयारी करने का गठबंधन के दलों को पूरा समय नहीं मिला। इस विवाद ने गठबंधन को जमीन पर कमजोर किया। तेजस्वी यादव उस भरोसे को हसिल करने में असफल रहे, जो वोटरों को अपने पक्ष में कर सकता था। घोषणापत्र का नाम 'तेजस्वी प्रण' रखना भी गलत फैसला साबित हुआ और प्रचार में सहयोगियों को तरजीह न देना महागठबंधन को भारी पड़ा। चुनावी नजीतों ने साबित किया कि तेजस्वी प्रण महागठबंधन में प्राण नहीं फूंक सका।

3. 'जंगलराज और मुस्लिमपरस्त' छवि का नुकसान

महागठबंधन मुस्लिम बहुल सीटों पर तो मजबूत रहा, लेकिन पूरे प्रदेश में यह छवि नुकसानदेह साबित हुई। बीजेपी ने इसे भुनाया और यादव वोट भी कई जगहों पर आरजेडी से खिसक गए। वक्फ बिल पर तेजस्वी के बयान ने भी विवाद बढ़ाया। दूसरी ओर एनडीए ने पूरे चुनाव के दौरान लालूराज की याद दिलाकर जंगलराज को निशाना बनाया।

आरजेडी उम्मीदवारों के मंच से दबंगई के अंदाज में 'कट्टे वाला' चुनाव प्रचार भी लोगों को पसंद नहीं आया। चुनाव प्रचार के आखिरी दिन राजद उम्मीदवारों के मंच से तेजस्वी राज आने पर कट्टा लहराने के दावे किए गए। इससे जनता को जंगलराज का दौर फिर याद आ गया। नतीजा जो वोट पक्ष में पड़ते वह भी एनडीए के पक्ष में चला गया।

4. जातीय समीकरण को बहुत अधिक तरजीह

राष्ट्रीय जनता दल ने 144 सीटों में से 52 यादव उम्मीदवार उतारे, यानी करीब 36। यह तेजस्वी की 'यादव एकीकरण' रणनीति थी, लेकिन इससे जातिवादी छवि और मजबूत हो गई। सहयागी पार्टी भी शुरुआती दौर में इस फैसले से असहमत दिखे। गैर–यादव वोट बैंक–अगड़े और अति पिछड़े– महागठबंधन से दूर हो गए। बीजेपी ने इसे 'यादव राज' का नैरेटिव बनाकर शहरी और मध्यम वर्ग के बीच इसे खूब भुनाया।

5. एनडीए का एकजुट चेहरा, मोदी फैक्टर और नीतीश पर भरोसा

एनडीए ने सीट शेयरिंग और प्रचार में एकजुटता दिखाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की रैलियों ने एनडीए को मजबूत नैरेटिव दिया। महागठबंधन की अंदरूनी खींचतान के मुकाबले एनडीए का चुनावी प्रबंधन बहुत हद तक प्रभावी रहा और पूरे बिहार में वोटरों ने मोदी–नीतीश की जोड़ी पर भरोसा जताया। चुनावी समर के बीच में भाजपा के बड़े नेताओं ने भी अपरोक्ष रूप से साफ कर दिया कि सीएम नीतीश ही होगे। इस एकजुटता से एनडीए पर भाजपा का भरोसा बढ़ा।

6. चुनावी पोस्टरों में लालू यादव की छोटी तस्वीर

तेजस्वी ने लालू की विरासत को अपनाया, लेकिन चुनावी पोस्टर्स में उनकी तस्वीर छोटी कर 'नई पीढ़ी' का संदेश देने की कोशिश की। इससे राजद के पुराने कार्यकर्ताओं में चुनाव प्रचार के दौरान असंतोष दिखा। राजद की यह दोहरी नीति उलटी पड़ गई। एनडीए ने इसे 'जंगलराज के पाप छिपाने' का मुद्दा बना दिया। एक बड़ी आबादी इससे सहमत भी हुई और अपना वोट महागठबंधन को न देकर एनडीए को दे दिया।

धर्मेंद्र प्रधान बोले– हमें अपने विजन को बंगाल ले जाना है

केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने बिहार में एनडीए की जीत पर कहा, "जिस तरह से विपक्ष प्रचार कर रहा था, हम समझ गए थे कि जनता इस नकारात्मकता को नकार देगी और हम एक बड़ी जीत की ओर बढ़ रहे हैं... प्रधानमंत्री कहते हैं कि जब तक पूर्वोदय का विकास नहीं होगा, तब तक विकसित भारत नहीं होगा, बिहार, बंगाल, ओडिशा, झारखंड ये सब हमारे पूर्वोत्तर का हिस्सा हैं, आज देश में जो कुछ भी हो रहा है, हमें उस विजन को बंगाल तक ले जाना है।"

शिवसेना यूबीटी ने लगाए बिहार में वोट चोरी के आरोप

शिवसेना (उद्धव–बालासाहेब ठाकरे) के नेता आदित्य ठाकरे ने बिहार में एनडीए की जीत पर कहा, "मैं सबसे पहले चुनाव आयोग का अभिनंदन करना चाहूंगा कि उन्होंने भाजपा के लिए जो प्रयोग किया है, वह यशस्वी दिख रहा है... महिलाएं बहुत विचार करके मतदान करती हैं... महिलाएं कभी भी पैसों के लिए वोट नहीं देती हैं। ये लोग वोट चोरी को न्यायोचित ठहराने के लिए महिलाओं को आगे ला रहे हैं... वोट चोरी हुई है।"

बिहार चुनाव पर राहुल गांधी ने दी प्रतिक्रिया

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों को बेहद चौंकाने वाला बताया। उन्होंने कहा कि महागठबंधन जीत हासिल नहीं कर सका क्योंकि चुनाव की प्रक्रिया शुरुआत से ही निष्पक्ष नहीं थी। राहुल गांधी के अनुसार, यह नतीजे चुनाव की उस स्थिति को दर्शाते हैं, जहां बराबरी की लड़ाई संभव ही नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि महागठबंधन को जनता का व्यापक समर्थन मिला, लेकिन चुनाव में निष्पक्षता की कमी ने नतीजों को प्रभावित किया।

एनडीए की जीत पर पप्पू यादव का कटाक्ष

पूर्णिया से निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने बिहार में एनडीए की जीत पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, "मैं बिहार की जनता के निर्णय का सम्मान करता हूं। क्या 20 हजार करोड़ रुपए में बिहार के वोट खरीदे जा सकते हैं?... क्या अब रोजगार का मुद्दा बचेगा?... क्या जनता का यह जनादेश था?... यह हम सभी की जिम्मेदारी थी... नीतीश कुमार के विचारों का भाजपा के विचारों के साथ कोई मेल नहीं है।"

पीयूष गोयल बोले– बिहार के लिए नए अवसर खुलेंगे

बिहार चुनाव के नतीजों को लेकर केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा, "मैं समझता हूं कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में छक। ने बिहार चुनाव में एक अद्भुत विजय प्राप्त की है। यह भारत के लोगों के दिल की आवाज है। बिहार के लोगों ने सुशासन और विकास के लिए अपना मत दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आने वाले वर्ष बिहार के सुनहरे वर्ष होंगे। बिहार की जनता के लिए नए अवसर और नए मौके खुलेंगे।"

मैंने कहा था 80 से ज्यादा सीट मिलेगी– केसी त्यागी

जदयू नेता केसी त्यागी ने कहा, मैंने कहा था कि जदयू 80 से ज्यादा सीट जीतेगी। पिछली बार आपसी तालमेल के अभाव में हम नहीं कर पाए थे। मुझे प्रसन्नता है कि जदयू ने दोबारा नीतीश कुमार के नेतृत्व में अपनी उसी संख्या को प्राप्त किया है... हमारे बीच एक लंबा और पुराना ऐतिहासिक रिश्ता है। सुशासन का मतलब है नीतीश कुमार और नीतीश कुमार का मतलब है बिहार की एनडीए सरकार।

पिता की गद्दी पर बेटी देवयानी राणा का राज कांग्रेस उम्मीदवार को 24 हजार वोटों से दी मात

जम्मू,एजेंसी। जम्मू–कश्मीर के नगरोटा विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में 75 प्रतिशत से ज्यादा मतदान हुआ था। वहीं, 2024 के विधानसभा चुनावों में इस क्षेत्र में 77.66 प्रतिशत मतदान हुआ था। भाजपा विधायक देवेंद्र सिंह राणा के निधन के बाद इस सीट पर उपचुनाव कराया गया है। पूर्व विधायक देवेंद्र सिंह राणा की बेटी और भाजपा उम्मीदवार देवयानी राणा ने शानदार जीत हासिल किया है। बीजेपी उम्मीदवार देवयानी राणा कुल 42350 वोट पाकर विजयी हुई हैं। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस उम्मीदवार हर्ष देव सिंह को 24647 वोटों से हराया है। इस शानदार जीत के बाद उनके पूरे परिवार में खुशी का माहौल है। वहीं, उनके समर्थक जीत के जश्न में डूबे हुए नजर आ रहे हैं।

इस विधानसभा क्षेत्र में 97 हजार 980 मतदाता थे, जिसमें से 11 नवंबर को हुए मतदान में 75.08 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया था और शुक्रवार सुबह आठ बजे जम्मू में बिक्रम चौक स्थित पॉलिटेक्निक कॉलेज में मतगणना शुरू हुई, जिसमें भाजपा उम्मीदवार देवयानी राणा ने पहले ही राउंड में बढ़त ले ली थी। मतगणना 11 राउंड में पूरी हुई और हर राउंड में देवयानी राणा की लीड बढ़ती गई और कोई भी उम्मीदवार उनके निकट नहीं पहुंच सका। सुबह करीब साढ़े ग्यारह बजे मतगणना पूर्ण हुई जिसमें देवयानी

नगरोटा उपचुनाव की मतगणना आज देवेंद्र राणा के निधन से उपचुनाव देवयानी राणा को जनादेश का विश्वास

राणा विजयी रही। मतणगना के शुरूआती रूझान आते ही मतगणना केंद्र के बाहर भाजपा समर्थकों की भीड़ उमड़ना शुरू हो गई थी। नतीजें घोषित होने से पहले ही भाजपा समर्थकों ने मतगणना केंद्र के बाहर जश्न मनाना शुरू कर दिया था। नतीजें घोषित होने से कुछ समय पूर्व भाजपा उम्मीदवार देवयानी राणा भी मतगणना केंद्र पहुंची और उत्साहित समर्थकों ने उन्हें कंधों पर उठाकर जीत का जश्न मनाया। जीत की घोषणा के बाद देवयानी राणा वहां से त्रिकुटा नगर पार्टी मुख्यालय पहुंची और पार्टी के शीर्ष नेताओं से भेंट की।

बिहार नतीजों का राहुल फैक्टर

हाइड्रोजन बम फुस्स, 'वोट चोरी' भी बेअसर, बैकफुट पर महागठबंधन

नई दिल्ली,एजेंसी। पहले वोट चोरी के आरोप को लेकर राहुल गांधी ने प्रेस वार्ता कर कई दावे किए, फिर बिहार में कई रैलियां की। अंत में हाइड्रोजन बम का नाम लेकर केंद्र सरकार और चुनाव आयोग पर जमकर निशाना भी साधा। हालांकि इन सबके बाद जब आज मतगणना शुरू हुई तब जनता के मत ने कांग्रेस की चुनावी समीकरण की रूपरेखा ही बदलकर रख दिया। बिहार में इस बार का विधानसभा चुनाव आसान नहीं रहा। राजनीतिक पार्टियों ने चुनावी रण में अपने सारे धागे खोल कर रख दिए। क्या भाजपा, क्या कांग्रेस और क्या राजद–जदयू सभी राजनीतिक पार्टियों ने जमकर प्रचार–प्रसार और चुनावी वादे किए। इन सब के बीच ऊहापोह इस बात की तेज थी कि बिहार में इस बार

महागठबंधन का 'राहुल फैक्टर' चुनावी नतीजे को प्रभावित कर सकता है। कारण है कि बीते कई महीनों से राहुल गांधी ने वोट चोरी का मुद्दा खुब उठाया है। पहले प्रेस वार्ता में कई दावे किए, फिर बिहार में खूब रैलियां की और अंत में 'हाइड्रोडन बम' के माध्यम से केंद्र सरकार और चुनाव आयोग पर जमकर निशाना साधा।

हालांकि आज जब मतगणना शुरू हुई तब जनता का मत कुछ और ही दिखा। मत इतना प्रभावी था महागठबंध और कांग्रेस के सभी चुनावी समीकरण बेअसर होते दिखे। खासकर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की तरफ से चुनाव आयोग और केंद्र सरकार पर लगाए गए आरोप भी धूमिल होता दिखा। ताजा अपडेट के अनुसार पार्टी का प्रदर्शन लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास), ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) और हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) से भी खराब रहा है।

कांग्रेस का लोजपा और एआईएमआईएम से भी बुरा हाल

चुनाव आयोग के आंकड़े बताते है कि अभी तक की मतगणना के अनुसार कांग्रेस केवल चार सीटों पर आगे चल रही है। वहीं लोजपा (आर) 20, एआईएमआईएम और जीतन राम मांझी की पार्टी हम पांच सीटों पर अपनी बढ़त बनाए हुए है। ऐसे में ये भी कहना गलत नहीं होगा कि भाजपा और जेदयू समर्थित एनडीए गठबंधन ने एकतरफा बढ़त हासिल कर बिहार में 'राहुल फैक्टर' पूरी तरह खत्म कर दिया। उनके साथ–साथ तेजस्वी यादव का इस बार मुख्यमंत्री बनने का सपना पर टूटता दिख रहा है।

कितनी सीटों पर एनडीए की बढ़त?

बता दें कि खबर लिखे जाने तक एनडीए ने 201 सीटों पर अपनी बढ़त बना रखी है, जिसमें भाजपा 91, जेदयू 81, लोजपा (आर) 21 रालोमो 2 और हम ने अपनी पांच सीटों पर बेजोड़ बढ़त बना रखी है। वहीं बात अगर महागठबंधन की करें तो राजद ने 27 सीटों पर कांग्रेस चार, वामदल चार, वीआईपी ने एक सीट पर अपनी बढ़त कायम रखा है।

जिन्हें डिप्टी सीएम बनना था खाता भी नही खुला !

पटना,एजेंसी। बिहार चुनाव के रुझानों से स्पष्ट हो गया है कि बिहार में एक बार फिर नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनने जा रही है। महागठबंधन दावों के विपरीत बुरी तरह से पिछड़ता नजर आ रहा है। महागठबंधन की सहयोगी पार्टियों की स्थिति बहुत बुरी है और मुकेश सहनी के नेतृत्व वाली वीआईपी पार्टी का तो खाता भी नहीं खुल सका है। मुकेश सहनी महागठबंधन के डिप्टी सीएम पद के चेहरे थे, लेकिन उनकी पार्टी के खराब प्रदर्शन ने उनकी राजनीतिक संभावनाओं पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।

जातीय प्रभाव वाले राज्य बिहार में मुकेश सहनी की राह मुश्किल

महागठबंधन में सीट बंटवारे के तहत विकासशील इंसान पार्टी (वीआईपी) को 15 सीटें मिलीं थी, लेकिन वीआईपी पार्टी एक भी सीट पर जीत दर्ज नहीं कर सकी। मुकेश सहनी ने साल 2018 में विकासशील इंसान पार्टी का गठन किया था। यह पार्टी निषाद–मल्लाह समुदाय के हितों की पैरोकार होने का दावा करती है। बिहार में इस समुदाय की कुल आबादी महज 2.6 प्रतिशत ही है। उस पर भी इस समुदाय के कुछ बड़े नेता एनडीए के साथ हैं। ऐसे में मुकेश सहनी की संभावनाएं पहले ही कमजोर थीं, ऊपर से मुकेश सहनी खुद को सन ऑफ मल्लाह कहकर खुद ही अन्य जातियों से दूरी बना चुके हैं। बिहार जैसे राज्य में जहां जाति की राजनीति अभी भी बहुत प्रभावी है, ऐसे में वहां ये बात बेहद मायने रखती है। बिहार में साल 2020 में हुए विधानसभा चुनाव में मुकेश सहनी की वीआईपी पार्टी ने महागठबंधन के साथ चुनाव लड़ते हुए 11 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे और पार्टी ने 4 सीटों पर जीत दर्ज की थी।

केसी त्यागी ने दिया नीतीश कुमार को जीत का श्रेय

गिरिराज बोले– अब बंगाल की बारी

पटना,एजेंसी। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के रूझानों में एनडीए को स्पष्ट बहुमत मिलता दिख रहा है, जिसके बाद भाजपा और जदयू नेताओं के लगातार बयान सामने आ रहे हैं। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के नतीजों के रूझानों में एनडीए को स्पष्ट बहुमत मिलता दिख रहा है। जैसे–जैसे सीटों का आंकड़ा एनडीए के पक्ष में बढ़ रहा है, भाजपा, जदयू और सहयोगी दलों के नेताओं ने अपनी प्रतिक्रियाएं देना शुरू कर दी हैं। उन्होंने इसे जनता के विश्वास की जीत और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की नेतृत्व क्षमता का परिणाम बताया है।

दिल्ली में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने कहा कि जनता के चेहरों से ही साफ पता चल रहा था कि इस बार भी एनडीए को जनादेश मिलने वाला है। उन्होंने कहा, 'एनडीए फिर से सरकार बनाने जा रहा है। नीतीश कुमार, चिराग पासवान, जीतन राम मांझी, उपेंद्र कुशवाहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, जेपी नड्डा, अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सभी नेताओं ने जबरदस्त मेहनत की है। हम '2025, फिर से नीतीश' के चेहरे पर चुनाव लड़े थे।'

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा, 'बिहार की जीत हमारी है। अब अगली बारी बंगाल की है, क्योंकि वहां से भी रोहिंग्या–बांग्लादेशी घुसपैठियों को निकालना जरूरी है।' जदयू के वरिष्ठ नेता के.सी. त्यागी ने एनडीए के बहुमत के रूझानों पर कहा, 'चुनाव से पहले ही मैंने कहा था कि जदयू करीब 80 सीटें जीतेगी। यह नीतीश कुमार की करिश्माई नेतृत्व क्षमता का परिणाम है।'

तेजस्वी यादव के स्टड और चुनाव आयोग पर आरोपों पर त्यागी ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि "हार के बाद अब वे इसे EC और स्टड पर थोप रहे हैं।" उन्होंने त्रिश्क नेता सुनील कुमार सिंह के बयान पर भी प्रतिक्रिया दी और कहा कि, "उन्हें पता होना चाहिए कि नेपाल में सत्ता पक्ष और विपक्षकृदोनों ही नेताओं के घर लूटे और जलाए गए थे।"

गया में एनडीए की बढ़त पर केंद्रीय मंत्री और हम (सेक्युलर) के संरक्षक जीतन राम मांझी ने कहा, "यह नतीजा अप्रत्याशित नहीं है। हम पहले से कह रहे थे कि एनडीए प्रचंड बहुमत से सरकार बनाएगा और नीतीश कुमार ही मुख्यमंत्री बनेंगे। ट्रेंड्स बताते हैं कि एनडीए 160 सीटों से कम नहीं जाएगा और महागठबंधन 70द्80 पर सिमट जाएगा।" दिल्ली में भाजपा प्रवक्ता सैयद शाहनवाज़ हुसैन ने भी दावा किया, "नतीजे साफ दिखाई दे रहे हैं। हम जीत रहे हैं। बिहार की जनता ने पीएम मोदी, नीतीश कुमार और एनडीए पर भरोसा जताया है। लोगों ने बीते 20 वर्षों की सरकार के काम पर वोट दिया है।"

बिहार विधानसभा चुनाव की मतगणना के रुझान में एनडीए फिर से सत्ता में लौटती दिख रही है। वहीं महागठबंधन को 50 सीटों से भी नीचे सिमटती दिख रही है। जिसके बाद विपक्षी नेताओं में बौखलाहट भी दिख रही है, कर्नाटक के सीएम सिद्धारमैया ने एक बार फिर वोट चोरी का राग अलापा है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शुक्रवार को कहा कि बिहार विधानसभा चुनाव में भी 'वोट चोरी' हुई है, जहां वोटों की गिनती के दौरान एनडीए आराम से बहुमत के पार निकलती दिख रही है। उन्होंने माना कि महागठबंधन (कांग्रेस–आरजेडी) को मिल रहे झटके की वजह उन्हें अभी साफ नहीं पता।

'जनता का फैसला स्वीकार करना होगा'

इस दौरान सिद्धारमैया ने कहा कि 'जनता के फैसले को हमें स्वीकार करना ही है। मुझे नहीं पता नाकामयाबी क्यों मिली, मैं बिहार गया भी नहीं था। कौन हमारे पक्ष में नहीं आया, क्यों नहीं आया–यह सब मैं पता करूंगा।' जब उनसे पूछा गया कि बिहार में ओबीसी वोट निर्णायक थे, फिर भी कांग्रेस को समर्थन क्यों नहीं मिला, तो उन्होंने पलटकर कहा, 'ओबीसी कौन नहीं है? नीतीश कुमार भी तो ओबीसी हैं।'

'मुकाबला जनता और ज्ञानेश कुमार के बीच'

बिहार चुनाव नतीजों पर बोली कांग्रेस

नई दिल्ली,एजेंसी। बिहार चुनाव नतीजों के रुझानों में एनडीए को आसानी से बहुमत मिलता नजर आ रहा है। रुझानों के बाद पटना में जदयू के कार्यालय के बाहर बड़ी संख्या में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के समर्थक इकट्ठा हो गए हैं। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के रुझान सामने आने के साथ ही आरोपों का शुरुआत हो चुकी है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने शुक्रवार को आरोप लगाते हुए कहा कि मुकाबला भारत के चुनाव आयोग और बिहार की जनता के बीच है और देखते हैं कि इसमें कौन जीतता है। उन्होंने कहा कि मैं राजनीतिक दलों की बात नहीं कर रहा हूं। उन्होंने कहा कि मैं मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और बिहार की जनता के बीच सीधे मुकाबले की बात कर रहा हूं।

पवन खेड़ा ने कहा, "ये शुरुआती रुझान हैं और हम अभी कुछ इंतजार करेंगे। फिलहाल आए रुझान इशारा हैं कि ज्ञानेश कुमार बिहार की जनता पर भारी पड़ रहे हैं। मैं बिहार के लोगों को कम नहीं आंक सकता हूं। उन्होंने हिम्मत दिखाई है। एसआईआर के बावजूद हिम्मत दिखाई है। देखते हैं कि आने वाले कुछ घंटों में ज्ञानेश कुमार कितने असरदार साबित होंगे।"

बिहार चुनाव नतीजों के रुझानों में एनडीए को आसानी से बहुमत मिलता नजर आ रहा है। कुछ ही देर में नतीजों की स्थिति पूरी तरह साफ हो जाएगी।

रुझानों के बाद पटना में जदयू के कार्यालय के बाहर बड़ी संख्या में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के समर्थक इकट्ठा हो गए हैं। रुझानों के मुताबिक एनडीए ने बहुमत के आंकड़े को पार करके 185 सीटों पर बढ़त बना रखी है।

रुझानों के अनुसार इन 185 सीटों में से जदयू 76, भाजपा 83, एलजेपी (रामविलास) 22 और हम पार्टी 4 सीटों पर आगे चल रही है। भाजपा सांसद ने रुझानों में एनडीए के बहुमत का आंकड़ा पार करने और बढ़त बनाए रखने पर कहा कि नतीजों ने साबित कर दिया है कि टाइगर अभी जिंदा है, वह अब और भी बेहतर काम करेंगे। उन्होंने कहा कि ये जीत बिहार की जनता की है। ये साफ है कि बिहार में डबल इंजन की सरकार बनने जा रही है। उन्होंने कहा कि लोगों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार पर भरोसा है। भाजपा और एनडीए के कार्यकर्ताओं ने कड़ी मेहनत की है और विकास की गति फिर बढ़ेगी।

कैसा होगा RJD के युवराज का भविष्य

पटना,एजेंसी। बिहार विधानसभा चुनाव के नतीजों के दोपहर 12 बजे तक के रुझानों की बात करें तो एनडीए ने 190 सीटों पर बढ़त बना रखी है. इसमें बीजेपी 85, जेडीयू 76, लोजपाआरवी 22, हम 4 और आरएलएम 3 सीटों पर आगे चल रही हैं. सियासत उनकी रगों में दौड़ती है, क्योंकि उनके पिता और मां दोनों बिहार के मुख्यमंत्री रह चुके हैं. कहने को वह आरजेडी के युवराज हैं और उन्हें 2025 के विधानसभा चुनाव में भावी सीएम माना जा रहा था, लेकिन बिहार के नतीजों ने उन्हें निस्तेज कर दिया है. बात हो रही है तेजस्वी यादव की, जिनके जीत के तमाम दावों को बिहार की जनता से सिरे से नकार दिया है. अब सवाल उठता है कि क्या यह चुनावी हार तेजस्वी यादव का राजनीतिक तेज खत्म कर देगी? इन नतीजों के बाद आरजेडी के युवराज का भविष्य कैसा होगा?

क्या होगा तेजस्वी का भविष्य?

तेजस्वी यादव की आरजेडी को महागठबंधन में 143 सीटें मिली थीं. इनमें 52 सीटों पर उन्होंने यादव कैंडिडेट्स उतारे. ऐसे में मैसेज यह गया कि तेजस्वी यादव का पूरा फोकस जातिवाद की राजनीति पर है, जिससे गैर–यादव वोट पूरी तरह छिटक गया. अगर तेजस्वी यादव अपनी यही छवि कायम रखते हैं तो उन्हें भविष्य में भी उन्हें नुकसान उठाना पड़ सकता है. दरअसल, चुनाव प्रचार के दौरान विरोधी पार्टी उनको आरजेडी की यादव नीति कहकर बार–बार घेर सकती है.

सोच–समझकर करने होंगे वादे

तेजस्वी यादव ने चुनाव प्रचार के दौरान कई ऐसे वादे किए, जिनका खाका वह सही तरीके से खुद भी नहीं खींच पाए. इन वादों में हर घर को सरकारी नौकरी देने का वादा भी शामिल है, जिसमें वह यह नहीं बता पाए कि इसे कैसे पूरा किया जाएगा. जब भी उनसे इसका ब्लू प्रिंट मांगा गया, वह जवाब देने से बचते दिखे. ऐसे में जनता को उन पर ऐतबार नहीं हो पाया और उन्हें हार झेलनी पड़ रही है. अगर तेजस्वी यादव को वापसी करनी है तो उन्हें इस पर काफी काम करना होगा. जनता से ऐसे वादे करने होंगे, जिन पर आसानी से भरोसा हो सके.

क्या तेज प्रताप से मिलेगी टक्कर?

परिवार में विवाद के बाद तेज प्रताप यादव ने अलग पार्टी बनाई और चुनाव मैदान में कूद पड़े. हालांकि, रुझानों में उनका हाल भी बेहद खराब है, लेकिन भविष्य में वह आरजेडी में वापसी कर सकते हैं और तेजस्वी यादव के सियासी भविष्य पर सवाल उठा सकते हैं.

क्या वापसी कर पाएंगे तेजस्वी यादव?

अब सवाल उठता है कि क्या इस हार के बाद तेजस्वी यादव वापसी कर पाएंगे? अगर देखा जाए तो राजनीति में कुछ भी परमानेंट नहीं होता है. यहां एक चुनाव के नतीजों का असर अक्सर दूसरे चुनाव पर नजर नहीं आता. अगर तेजस्वी यादव अपनी गलतियों पर ध्यान देंगे और इन्हें नहीं दोहराएंगे तो हालात बदल सकते हैं. आरजेडी एक बार फिर सत्ता का स्वाद चख सकती है।

20 साल बाद भी बिहार की सत्ता का पर्याय हैं नीतीश

दिल्ली,एजेंसी। आखिर बिहार विधानसभा चुनावों में 2005 से लेकर क्या–क्या हुआ है? किस तरह राज्य में अलग–अलग पार्टियों की सीटें और वोट प्रतिशत लगातार ऊपर–नीचे हुए हैं, लेकिन नीतीश कुमार किंग या किंगमेकर ही रहे हैं? इसके अलावा कैसे कम सीटें और वोट पाने के बावजूद नीतीश कुमार ने कैसे अपनी सत्ता बनाए रखी? बिहार में विधानसभा चुनाव के नतीजे आने लगे हैं। एक बार फिर राज्य में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनती नजर आ रही है। इस तरह बिहार में अब बीते 20 वर्षों की तर्ज पर ही नीतीश के फिर से सत्ता के शीर्ष पर काबिज होना तय हो गया है। 2005 के अंत में शुरू हुआ नीतीश कुमार का शासन अब अगले पांच साल चल सकता है। आखिर बिहार विधानसभा चुनावों में 2005 से लेकर क्या–क्या हुआ है? किस तरह राज्य में अलग–अलग पार्टियों की सीटें और वोट प्रतिशत लगातार ऊपर–नीचे हुए हैं, लेकिन नीतीश कुमार किंग या किंगमेकर ही रहे हैं? इसके अलावा कैसे कम सीटें और वोट पाने के बावजूद नीतीश कुमार ने कैसे अपनी सत्ता बनाए रखी?

बिहार विधानसभा चुनाव 2025

अक्तूबर 2005 बिहार विधानसभा चुनाव परिणाम

दल का नाम	कुल उम्मीदवार	जीती हुई सीटें	प्राप्त वोट प्रतिशत
जनता दल (यूनाइटेड)	139	88	20.46%
भारतीय जनता पार्टी	102	55	15.65%
राष्ट्रीय जनता दल	175	54	23.45%
लोक जनशक्ति पार्टी	203	10	11.10%
कांग्रेस	51	9	6.09%

बिहार विधानसभा चुनाव 2025

15 साल में पहली बार सबसे ज्यादा सीट पाकर भी सत्ता नहीं बचा पाए लालू

दल का नाम	कुल उम्मीदवार	जीती हुई सीटें	वोट प्रतिशत
राष्ट्रीय जनता दल (RJD)	210	75	25.07%
जनता दल (यूनाइटेड) (JD(U))	138	55	14.55%
भारतीय जनता पार्टी (BJP)	103	37	10.97%
लोक जनशक्ति पार्टी (LJP)	178	29	12.62%
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)	51	10	4.09%
अन्य	-	37	-

2020 नीतीश और सत्ता दोनों एनडीए के पास लौटे

गठबंधन	दल	सीटें लड़ीं	सीटें जीतीं	वोट प्रतिशत	2015 से बदलाव
एनडीए	भाजपा	110	74	19.46	21
	जदयू	115	43	15.39	-28
	वीआईपी	11	4	1.52	-
	हम	7	4	0.89	3
कुल			125		
महागठबंधन	राजद	144	75	23.11	-5
	कांग्रेस	70	19	9.48	-8
	भाकपा-माले	19	12	3.16	9
	भाकपा	6	2	0.83	2
	माकपा	4	2	0.65	2
कुल			110		
तीसरा मोर्चा	AIMIM	20	5	1.24	5
	बसपा	78	1	1.49	1
	रालोसपा	99	0	1.77	-2
कुल			6		
अन्य	लोजपा	135	1	5.66	-1
	निर्दलीय	1299	1	8.64	-3

2015 महागठबंधन को मिला फायदा भाजपा तीसरे पायदान पर

गठबंधन	दल	सीटें लड़ीं	सीटें जीतीं	वोट प्रतिशत	2010 से बदलाव
महागठबंधन	राजद	101	80	18.40%	58 ↑
	जदयू	101	71	16.80%	44 ↓
	कांग्रेस	41	27	6.70%	23 ↑
कुल			178		
एनडीए	भाजपा	157	53	24.40%	38 ↓
	लोजपा	42	2	4.80%	1 ↓
	रालोस	23	2	2.60%	2 ↑
	हम	21	1	2.30%	1 ↑
कुल			58		
वामपंथी मोर्चा	भाकपा	98	0	1.36%	1 ↓
	भाकपा (माले)	98	3	1.54%	3 ↑
	माकपा	43	0	0.61%	—
सोशलिस्ट सेक्युलर मोर्चा	सपा	85	0	1.00%	—
	जाप	64	0	1.40%	—
	राकांपा	40	0	0.50%	—
	एसएसपी	28	0	—	—
	एसजेडी-डी	23	0	—	—
	एनपीपी	3	0	—	—
अन्य दल		0	—	—	—
निर्दलीय		—	4	—	—

जब किंगमेकर बनी लोजपा, पर बिहार को किंग नहीं मिला

इस चुनाव में जिस पार्टी ने अपने प्रदर्शन से सबसे ज्यादा चौंकाया, वह रामविलास पासवान की लोकजनशक्ति पार्टी (लोजपा) थी। लोजपा को इस चुनाव में 29 सीटें मिलीं। वहीं, 84 सीटों पर उम्मीदवार उतारने वाली कांग्रेस 10 सीट ही जीत सकी। नतीजों में किसी भी दल को बहुमत नहीं मिला। जोड़तोड़ शुरू हुई। लोजपा किंगमेकर की भूमिका में थी। कहा जाता है कि नतीजों के बाद रामविलास पासवान इस बात पर अड़ गए कि वो किसी भी गठबंधन को समर्थन तभी देंगे जब किसी मुस्लिम को मुख्यमंत्री बनाया जाएगा। गतिरोध कायम रहा। लोजपा की शर्तों के आगे कोई समाधान नहीं निकल सका। अंततः राज्य में नए सिरे से चुनाव हुए।

सात महीने में बदल गया बिहार

चुनाव बाद किसी सरकार का गठन नहीं होने के चलते राज्य में राष्ट्रपति शासन लग गया। अक्तूबर–नवंबर में फिर चुनाव हुए। महज सात महीने बाद हुए इस चुनाव में एनडीए को स्पष्ट बहुमत मिल गया। जदयू को 88 और भाजपा को 55 सीटें मिलीं। इस तरह एनडीए 143 सीट जीतकर सत्ता में आया और नीतीश कुमार राज्य के नए मुख्यमंत्री बने।

कौन हैं मलाइका अरोड़ा का पहला क्रश

एंटरटेनमेंट डेस्क। काजोल और ट्विंकल खन्ना के टॉक शो 'टू मच विद काजोल एंड ट्विंकल' के दौरान एक बॉलीवुड एक्ट्रेस ने मलाइका अरोड़ा के पुराने क्रश को लेकर कई खुलासे किए। अभिनेत्री मलाइका अरोड़ा ने सोशल मीडिया हैंडल पर अपने पुराने क्रश के लिए अपनी प्रशंसा जताई है। उन्होंने सोशल मीडिया हैंडल पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें उनके पुराने क्रश का खुलासा हुआ।

मलाइका का पोस्ट

मलाइका अरोड़ा ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर चंकी की बेटी अनन्या पांडे की एक वीडियो क्लिप शेयर की, जिसमें अनन्या टॉक शो 'टू मच विद काजोल एंड ट्विंकल' में अपने माता–पिता चंकी और भावना की प्रेम कहानी बताती दिखीं। अनन्या ने बताया कि मलाइका के पास पहले चंकी का एक पोस्टर हुआ करता था, जो उनके रूम में था। मलाइका ने क्लिप शेयर करते हुए लिखा, '/बीनदालचंदकंल मेरे पास अभी भी आपका पोस्टर है, चिंता मत करो।' दरअसल, मलाइका को एक समय चंकी पर क्रश था।

मलाइका पहले भी बता चुकी हैं पहले क्रश के बारे में

यह पहली बार नहीं है जब मलाइका ने चंकी के लिए अपने प्यार का इजहार किया हो। पहले 'झलक दिखला जा' शो में जज के रूप में मलाइका और फराह खान ने बताया था कि दोनों को चंकी पर क्रश था। 'टू मच विद काजोल एंड ट्विंकल' में फराह ने मजाक में कहा कि अनन्या उनकी बेटी हो सकती थी, क्योंकि उन्हें भी चंकी बहुत पसंद थे। अनन्या यह सुनकर शरमा गईं।

फराह का मजाक

वहीं, फराह ने 'द ग्रेट इंडियन कपिल शो' में चंकी को बॉलीवुड का सबसे कंजूस व्यक्ति बताया था। जब कपिल शर्मा ने पूछा कि फराह और अनिल कपूर में कौन ज्यादा कंजूस है, तो फराह ने कहा कि वे दोनों उदार हैं, लेकिन चंकी सबसे कंजूस हैं। उन्होंने मजाक में कहा कि वह चंकी से 500 रुपये मांगकर दिखा सकती हैं।

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी'

में भाई–बहन पर असल जिंदगी में कपल हैं शगुन शर्मा और अमन गांधी

मुम्बई,एजेंसी। क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में शगुन शर्मा और अमन गांधी भाई–बहन के रोल में हैं, पर असल जिंदगी में वो एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं। कपल ने हाल ही अपनी लव स्टोरी शेयर की और बताया कि दोनों एक–दूसरे को कबसे डेट कर रहे थे। यह भी बताया कि भाई–बहन का रोल करने में मुश्किल हुई या नहीं। स्मृति ईरानी स्टारर 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में नजर आने वालीं एक्ट्रेस शगुन शर्मा ने अपना रिलेशनशिप कन्फर्म किया है। वह को–स्टार अमन गांधी को डेट कर रही हैं। मजेदार बात यह है कि ये दोनों एक्टर्स 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में भाई–बहन बने हैं, पर असल जिंदगी में कपल हैं। शगुन शर्मा ने एक इंटरव्यू में अमन गांधी संग अपने रिलेशनशिप पर बात की। एक्ट्रेस ने बताया कि दोनों कब से एक–दूसरे को डेट कर रहे हैं और यह भी खुलासा किया कि भाई–बहन के रोल से उनके रोमांटिक रिश्ते पर फर्क पड़ा है या नहीं। यहां जानिए शगुन शर्मा और अमन गांधी की लव स्टोरी कैसे शुरू हुईः च्पबेः ँहिनद ँतिउं प्देजंहतंउ

ऐसे शुरू हुई थीं अफेयर की चर्चाएं

'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' में अमन गांधी गर्लफ्रेंड शगुन शर्मा के छोटे भाई के रोल में नजर आ रहे हैं। दोनों ने इस साल वैलेंटाइन पर जब रोमांटिक तस्वीरें शेयर की थीं, तो तभी से उनके अफेयर की चर्चाएं होने लगी थीं। अब शगुन ने एक इंटरव्यू में रिश्ता कन्फर्म कर दिया और कहा कि ये अफवाह नहीं है। वह अमन गांधी को डेट कर रही हैं और यह सच है।

'हर वंश फले फूले सभी सुरक्षित रहें'

दिल्ली बम धमाके पर राजपाल यादव ने मांगी सबके लिए दुआ, साझा किया वीडियो

एंटरटेनमेंट डेस्क। दिल्ली में बीते दिनों कार धमाका हुआ था, जिसने सभी को हैरान कर दिया था। अब अभिनेता राजपाल यादव ने एक वीडियो साझा कर सभी नागिरकों की सुरक्षा की कामना की है। राजधानी दिल्ली के लाल किला के पास बीते दिनों जोरदार धमाका हुआ, जिसमें कई लोगों की जान चली गई थी। साथ ही कई लोग घायल भी हो गए थे। इस घटना ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया था। मनोरंजन जगत के दिग्गज सितारों ने भी पीड़ितों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए लोगों की सुरक्षा की कामना की थी। आज बुधवार को हास्य अभिनेता राजपाल यादव ने अपने सोशल मीडिया पर वीडियो साझा कर प्रत्येक नागरिकों की सुरक्षा के लिए दुआ मांगी और कहा कि ऐसी घटना कहीं ना हो।

नागरिकों के लिए मांगी दुआ

अभिनेता राजपाल यादव ने अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट साझा किया है। इसमें वह किसी शूट के लिए तैयार होते दिख रहे हैं। साथ ही वह कहते हैं, 'सुबह का समय है। एक शब्द मैं बचपन से सुनता हूं हरि हर, जो आशीर्वाद के रूप में प्रयोग होता है। मैं चाहता हूं कि हर वंश (सभी लोग) फले फूले और सुरक्षित रहें। वसुधैव कुटुंबकम।'

बोली– उस आदमी ने मेरा चेहरा पकड़ा, मुंह से मुंह लगा सांस लेते दिखाया

मौनी राय संग बालीवुड में हुई थी बदतमीजी

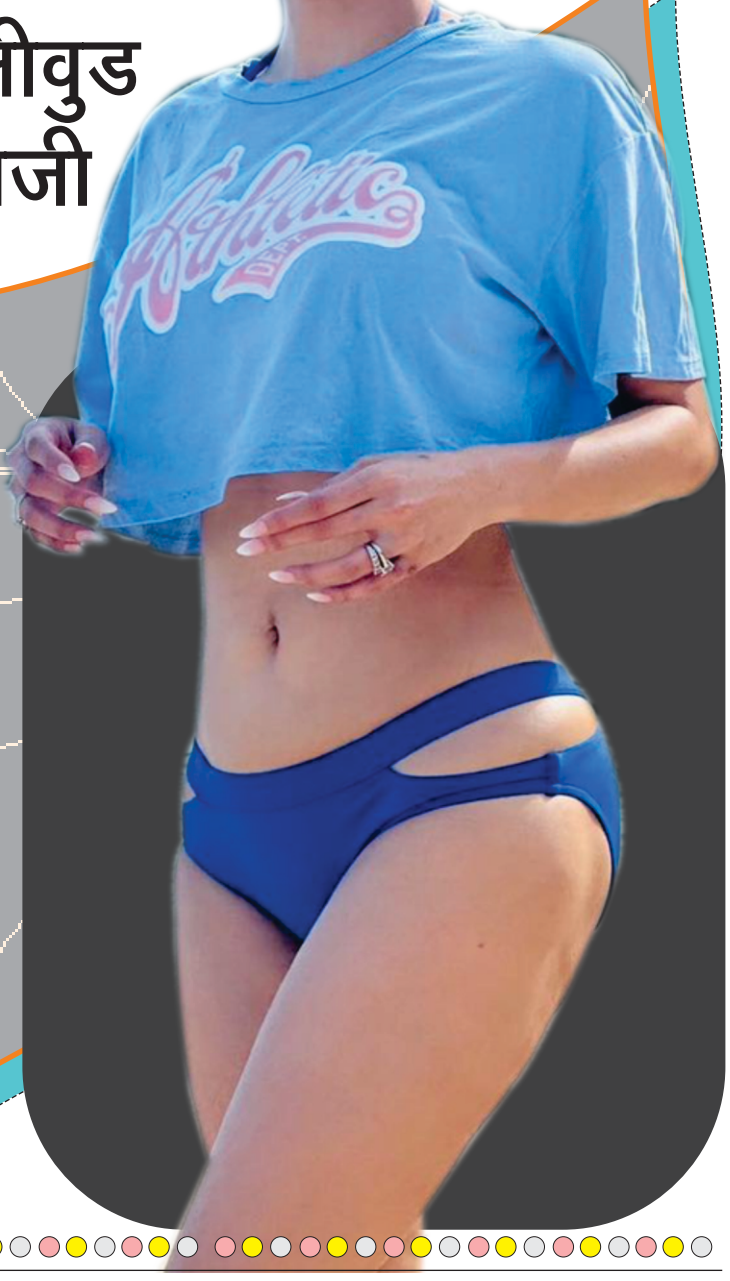

मौनी रॉय ने करियर के शुरुआती दिनों की एक घटना का जिक्र किया है, जो 21 साल की उम्र में उनके साथ बॉलीवुड में घटी थी। तब एक शख्स ने एक सीन के लिए उनका चेहरा पकड़ मुंह से मुंह लगाकर सांस लेते दिखाया था। मौनी वहां से भाग गईं और सकपका गई थीं।

मौनी रॉय संग बॉलीवुड में हुई थी बदतमीजी, बोलीं– उस आदमी ने मेरा चेहरा पकड़ा, मुंह से मुंह लगा सांस लेते दिखाया,

एक्ट्रेस मौनी रॉय ने बॉलीवुड में अपने शुरुआती दिनों की एक ऐसी घटना के बारे में बताया है, जिसने उन्हें बुरी तरह झकझोर दिया था, और जिंदगी भर के लिए एक गहरा जख्म दे दिया। यह तब की बात है, जब वह 21 साल की थीं। मौनी ने बताया कि उन्होंने इंडस्ट्री में कभी कास्टिंग काउच का सामना नहीं किया, पर उस एक घटना ने उन्हें बहुत बुरी तरह परेशान कर दिया था। मौनी ने इसका खुलासा 'स्पाइस इट अप विद अपूर्वा मखीजा' में किया।

मौनी रॉय ने उस घटना को याद करते हुए बताया कि वह एक ऑफिस में नैरेशन सेशन के लिए गई थीं, जहां कई लोग मौजूद थे। उन्होंने कहा, 'मैं 21–22 साल की थी। एक सीन था, जिसमें लड़की स्विमिंग पूल में गिर जाती है, बेहोश हो जाती है और हीरो उसे होश में लाने के लिए मुंह से सांस देता है।'

अस्पताल से डिस्चार्ज हुए गोविन्दा

एंटरटेनमेंट डेस्क। अभिनेता गोविंदा के हॉस्पिटल में भर्ती होने की खबर ने उनके फैंस को हैरान कर दिया था। अब एक्टर डिस्चार्ज हो गए हैं। बॉलीवुड अभिनेता गोविंदा मुंबई के अस्पताल में भर्ती होने के बाद अब डिस्चार्ज हो गए हैं। एक्टर ने खुद बाहर आकर अपनी सेहत की जानकारी दी है।

ज्यादा एक्सरसाइज करना खतरनाक है

एक्टर गोविंदा ने अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद मीडिया से बात की, जिसका वीडियो सामने आया है। उन्होंने कहा– 'मैंने बहुत ज्यादा एक्सरसाइज की थी और बहुत थक गया था। योग–प्राणायाम अच्छा है, लेकिन ज्यादा एक्सरसाइज करना मुश्किल होता है। मैं अपनी पर्सनैलिटी और बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा हूं। मुझे लगता है कि योग–प्राणायाम बेहतर है।' इसके साथ ही उन्होंने कहा कि डॉक्टरों ने उन्हें दवा दी है।

गोविंदा ने खुद दी सेहत की जानकारी

अभिनेता गोविंदा ने एएनआई से बातचीत करते हुए अपने स्वास्थ्य को लेकर जानकारी दी। उन्होंने कहा, 'आपका बहुत–बहुत धन्यवाद, मैं ठीक हूं।' ये खबर जान एक्टर के फैंस को थोड़ी राहत मिलेगी, क्योंकि इसने प्रशंसकों को काफी हैरान कर दिया था।

ईशा सिंह ने विश्व चैंपियनशिप में जीता कांस्य

स्पोर्ट्स डेस्क। ईशा ने फाइनल में 30 का स्कोर किया और वह चीन के याओ कियानक्सुन (38, रजत पदक) और कोरिया की मौजूदा ओलंपिक चैंपियन यांग जिन (40, स्वर्ण) से पीछे रहकर तीसरे स्थान पर रहीं। भारतीय महिला निशानेबाज ईशा सिंह ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विश्व निशानेबाजी चैंपियनशिप में कांस्य पदक अपने नाम किया। ईशा ने महिला 25 मीटर पिस्टल वर्ग में पदक जीता। लेकिन पेरिस ओलंपिक की पदक विजेता मनु भाकर फिर पोडियम फिनिश करने में असफल रहीं। ईशा ने फाइनल में 30 का स्कोर किया और वह चीन के याओ कियानक्सुन (38, रजत पदक) और कोरिया की मौजूदा ओलंपिक चैंपियन यांग जिन (40, स्वर्ण) से पीछे रहकर तीसरे स्थान पर रहीं।

भारत तालिका में तीसरे स्थान पर

ईशा के पदक से भारत ने टूर्नामेंट में 10 ओलंपिक स्पर्धाओं में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए एक स्वर्ण, चार रजत और दो कांस्य पदक हासिल किए। भारत कुल मिलाकर तीन स्वर्ण, पांच रजत और चार कांस्य पदकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर है, जबकि चीन 10 स्वर्ण पदकों के साथ पहले और कोरिया छह स्वर्ण पदकों के साथ दूसरे स्थान पर है।

ईशा का इस साल तीसरा व्यक्तिगत आईएसएसएफ पदक

ईशा और दो बार की ओलंपिक पदक विजेता मनु भाकर ने रैपिड-फायर राउंड में क्रमशः 587 और 586 अंक हासिल करके शीर्ष आठ में जगह बनाई। ईशा ने क्वालिफाइंग में पांचवां, जबकि मनु ने छठा स्थान हासिल किया। राही सरनोबत के 572 अंक भारतीय तिकड़ी के लिए टीम पदक जीतने के लिए काफी नहीं थे जिससे वे 1745 अंक से चौथे स्थान पर रहीं। टीम कांस्य पदक जीतने वाली फ्रांस की टीम से तीन अंक पीछे रही। ईशा का यह इस साल का तीसरा व्यक्तिगत आईएसएसएफ पदक था। इससे पहले उन्होंने विश्व कप चरण में स्वर्ण और रजत पदक जीता था। अब वह दिसंबर में दोहा में आईएसएसएफ विश्व कप फाइनल में हिस्सा लेंगी।

सचिन तेंदुलकर के संन्यास के दिन कोहली ने बनाया 'विराट' कीर्तिमान

15 नवंबर 2023 को विराट कोहली ने जड़ा वनडे में 50वां शतक, विराट ने सचिन तेंदुलकर 49 को पीछे छोड़ा, वनडे में सर्वधिक शतक लगाने वाले बल्लेबाज

स्पोर्ट्स डेस्क। 15 नवंबर 2023, वनडे वर्ल्ड कप का सेमीफाइनल मैच और वानखेड़े का स्टेडियम। इस दिन सचिन के सामने विराट, विराट, विराट के नारे लग रहे थे। इस भारतीय स्टार खिलाड़ी ने मास्टर ब्लास्टर के आंखों के सामने उनके ही इतिहास को बदल दिया था। उस दिन विराट कोहली ने अपनी क्लासिक बल्लेबाजी से नया इतिहास लिखा। यह वही तारीख है जब सचिन ने 15 नवंबर 2013 को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा था। विराट कोहली वनडे क्रिकेट में सबसे अधिक शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए। वर्तमान समय में दुनिया के सबसे महान बल्लेबाजों में से एक कोहली ने 291वें मैच में यह ऐतिहासिक कारनामा किया। कोहली के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी और खास थी, क्योंकि जब उन्होंने यह किया तो सचिन तेंदुलकर मैदान में ही मौजूद थे। सचिन तेंदुलकर ने अपने अदभुत करियर में 49 वनडे शतक लगाए थे और अब कोहली ने उन्हें पीछे छोड़ दिया था।

106 गेंद पर जड़ा शतक

कोहली ने वर्ल्ड कप 2023 के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ 113 गेंदों में 117 रनों की पारी खेली। कोहली पहले ही कुछ मौकों पर इस रिकॉर्ड के करीब थे, लेकिन काफी पास पहुंचकर चूक गए थे। हालांकि, 15 नवंबर को कोहली ने कोई गलती नहीं की और शतक को पूरा किया। 106 गेंदों पर कोहली ने 9 चौकों और एक छक्के के साथ अपने शतक को पूरा किया।

रोहित ने दी धुंआधार शुरुआत

कोहली जब क्रीज पर आए थे तो भारत को एक धुंआधार शुरुआत मिल चुकी थी। रोहित शर्मा ने 29 गेंद में 47 रनों की पारी के साथ भारत को आतिशी शुरुआत दिलाई और जब वह आउट हुए तब भारत का स्कोर 8.2 ओवरों में 71 रन था। कोहली ने पहले थोड़ा सा समय लिया और आंख जमने के बाद अपने शॉट्स लगाए। 59 गेंद में कोहली ने अपना अर्धशतक पूरा किया जो आईसीसी टूर्नामेंट के नॉकआउट में उनका पहला अर्धशतक भी था।

ये भी बनाया रिकार्ड

इस पारी में ही कोहली ने सचिन के एक और रिकॉर्ड को भी तोड़ा। वह विश्व कप के एक संस्करण में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज भी बन गए। कोहली ने सचिन के 673 रनों के वर्ल्ड रिकॉर्ड को तोड़ दिया था। वह एक विश्व कप में सबसे अधिक बार 50 या उससे अधिक रनों की पारी खेलने वाले बल्लेबाज भी बने थे। इससे पहले यह रिकॉर्ड सचिन और शाकिब अल हसन के नाम संयुक्त रूप से था जिन्होंने सात-सात बार यह किया है।

कोहली ने वर्ल्ड कप 2023 के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ 113 गेंदों में 117 रनों की पारी खेली। कोहली पहले ही कुछ मौकों पर इस रिकॉर्ड के करीब थे, लेकिन काफी पास पहुंचकर चूक गए थे। हालांकि, 15 नवंबर को कोहली ने कोई गलती नहीं की और शतक को पूरा किया।

'लेग में कैच जाता है इसका', पंत की इस सूझबूझ से आउट हुए बावुमा, कुलदीप को दी थी यह नसीहत

कोलकाता,एजेंसी। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स में जारी है। इस टेस्ट के पहले दिन पहले सत्र में भारतीय गेंदबाजों का दबदबा रहा। दक्षिण अफ्रीका ने अच्छी शुरुआत के बाद 14 रन बनाने में तीन विकेट गंवा दिए। इनमें रेयान रिकेल्टन, एडेन मार्कर्म और कप्तान तेंबा बावुमा के विकेट शामिल हैं। हालांकि, बावुमा के विकेट को लेकर विकेटकीपर ऋषभ पंत के सूझबूझ ने चर्चा बटोरी है। पंत ने गेंदबाजी कुलदीप यादव को खास नसीहत दी थी और कुछ ही समय बाद उसी जगह पर बावुमा कैच दे बैठे।

पंत ने इस तरह बावुमा का शिकार करवाया

दरअसल, मैच के दौरान कुलदीप यादव की गेंदबाजी पर उपकप्तान पंत ने फील्ड सेट की थी। उन्होंने लेग में मौजूद सभी फील्डर्स को चौकन्ना रहने कहा था। पंत की बात स्टंप माइक पर रिकॉर्ड हुई। उन्होंने कुलदीप से कहा कि बावुमा स्वीप शॉट खेलते हैं और लेग में उनका कैच जाएगा। ऐसे में खिलाड़ी तैयार रहें। इसके कुछ देर बाद ही कुलदीप की एक फिरकी गेंद पर बावुमा लेग स्लिप में कैच दे बैठे। कुलदीप की गेंद उनके बल्ले के अंदरुनी हिस्से पर लगकर लेग स्लिप में खड़े ध्रुव जुरेल के पास पहुंची। जुरेल ने कोई गलती नहीं की। इसके बाद खिलाड़ी पंत की ओर देखते रहे। बावुमा खतरनाक बल्लेबाज हैं और गेंदबाजों को थकाने के लिए जाने जाते हैं, लेकिन भारत ने पंत की सूझबूझ से उनका विकेट जल्द निकाल लिया।

बुमराह ने रिकेल्टन और मार्करम को आउट किया

इससे पहले जसप्रीत बुमराह ने रेयान रिकेल्टन के बाद एडेन मार्करम को आउट किया। रिकेल्टन 23 रन और मार्करम 31 रन बनाकर आउट हुए। बुमराह ने रिकेल्टन को पारी के 11वें ओवर में क्लीन बोल्ड किया था। इसके बाद 13वें ओवर में बुमराह ने मार्करम को विकेटकीपर पंत के हाथों कैच कराया था। एक और दिलचस्प चीज जो देखने को मिली, वह यह रही कि भारत के तीनों विकेटकीपर एकसाथ फील्डिंग करते दिखे। पंत के अलावा राहुल स्लिप में और जुरेल लेग स्लिप में फील्डिंग करते दिखे।

दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेंबा बावुमा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। कगिसो रबाडा इस मैच में नहीं खेल रहे। उनकी जगह कॉर्बिन बॉश को प्लेइंग-11 में जगह मिली है। वहीं, भारत के लिए प्लेइंग-11 में दो बदलाव हैं। ऋषभ पंत की एंट्री हुई है। वह नीतीश रेड्डी की जगह शामिल हुए हैं। इसके अलावा अक्षर पटेल की भी टीम में एंट्री हुई है। यानी टीम इंडिया चार स्पिनर्स के साथ खेल रही है और इनमें तीन ऑलराउंडर हैं। साई सुदर्शन यह मैच नहीं खेल रहे। सुंदर तीसरे स्थान पर बल्लेबाजी कर सकते हैं।

मैच के दौरान कुलदीप यादव की गेंदबाजी पर उपकप्तान पंत ने फील्ड सेट की थी। उन्होंने लेग में मौजूद सभी फील्डर्स को चौकन्ना रहने कहा था। पंत की बात स्टंप माइक पर रिकॉर्ड हुई।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः- 273003
UPHIN/2023/90814
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।